

थालीनॉमिक्स: भारत में भोजन की थाली का अर्थशास्त्र

उपनःपितवाचरशिवःशिवाभिरूतिभिः ।

मयोभुरद्विषेण्यःसखासुशेवोअद्वयाः ॥

आओ पास हमारे, आओ, हे भोज्य! हे मंगल-धन्य सहायक!
आरोग्यदायी, अनिर्दय, हे प्रिय और निश्छल स्नेही आओ।

-ऋग्वेद

हालांकि अर्थव्यवस्था का जन साधारण के जीवन पर ठोस प्रभाव पड़ता है किंतु इस तथ्य पर लोगों का ध्यान कम जाता है। अर्थशास्त्र को जनसाधारण के जीवन से जोड़ने का भोजन की थाली, एक ऐसी वस्तु जिससे उसका सामना प्रतिदिन होता है, से अच्छा तरीका और क्या हो सकता है? “थालीनॉमिक्स : भारत में भोजन की थाली का अर्थशास्त्र” भारत में एक सामान्य व्यक्ति द्वारा एक थाली हेतु किए जाने वाले भुगतान के मापन का एक प्रयास है। क्या थाली की वहनीयता कम हुई है या बढ़ी है। क्या थाली सस्ती हुई है या महंगी? क्या शाकाहारी थाली और मांसाहारी थाली दोनों के लिए मुद्रास्फीति समान रही है? क्या भारत के अलग-अलग राज्यों और क्षेत्रों में थाली के मूल्य में मुद्रास्फीति भी अलग-अलग रही है? थाली के मूल्य में परिवर्तन किस घटक-अन्न, दालें, सब्जियां, अथवा भोजन पकाने में उपयोग किए जाने वाले ईंधन - के मूल्य परिवर्तित होने के कारण हुआ है? यह ऐसे प्रश्न हैं जो लुटियन दिल्ली में अथवा देश के अंदरूनी हिस्से में सड़क किनारे के ढाबे में रात्रि भोजन पर संवाद का विषय बन सकते हैं। इनका उत्तर अब दिया जा सकता है और ‘स्वस्थ’ बहस में कोई भी पक्ष लिया जा सकता है। भारतीयों के लिए दैनिक आहार से संबंधित दिशा-निर्देशों (राष्ट्रीय पोषण संस्थान), 2011 की सहायता से थाली के मूल्य का परिकलन किया गया है। हमने अप्रैल, 2006 से अक्टूबर, 2019 की अवधि में 25 राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के लगभग 80 केंद्रों से, उद्योगों में कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक से मासिक कीमतों के आंकड़ों का डाटा का उपयोग किया। संपूर्ण भारत के साथ-साथ इसके चारों क्षेत्रों-उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम - में हमने पाया कि शाकाहारी थाली के मूल्य में वर्ष 2015-16 में काफी कमी हुई है, हालांकि 2019 में इसके मूल्य में कुछ वृद्धि हुई है। जिसके परिणामस्वरूप एक परिवार जिसमें दो शाकाहारी थालियों का भोजन प्रतिदिन करने वाले पांच सदस्य हैं और उसके लिए औसत लगभग 10887 रु. प्रतिवर्ष की लाभ प्राप्ति हुई है जबकि मांसाहारी थाली में औसतन प्रतिवर्ष 11787 रु. की लाभ प्राप्ति हुई है। वर्ष 2006-07 एक औसत औद्योगिक श्रमिक की वार्षिक आय से यह ज्ञात होता है कि वर्ष 2019-20 की अवधि में शाकाहारी थाली की वहन क्षमता में 29 प्रतिशत का सुधार हुआ है जबकि मांसाहारी थाली में 18 प्रतिशत का सुधार हुआ है।

प्रस्तावना

11.1 हालांकि अर्थशास्त्र हम में से प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन को प्रभावित करता है किंतु इस तथ्य पर साधारण पुरुष या महिला किसी का भी ध्यान अक्सर नहीं जाता है। अर्थशास्त्री संभवतः स्वयं ही इस

स्थिति के लिए उत्तरदायी हैं क्योंकि प्रसरण-विषमता पर गंभीर और तकनीकी संवाद सबसे मेहनती तथा मेधावी व्यक्ति को भी डरा सकते हैं। क्या हम अर्थव्यवस्था को जनसाधारण के दैनिक जीवन से जोड़ सकते हैं? भारत के आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अध्याय 6

“टहोका का व्यावहारिक अर्थशास्त्र” के द्वारा मानव को स्वार्थी स्वचालित मशीन की बजाय मानव के रूप में समझने का नम्र प्रयास किया गया है, ताकि जनसाधारण उसकी विशिष्टताओं से अपने आपको जोड़ सके और उस सुगम स्पेक्ट्रम का प्रयोग व्यावहारिक परिवर्तन को समझने के लिए आर्थिक नीति के एक उपकरण के रूप में कर सके। अर्थशास्त्र को जनसाधारण से जोड़ने के इस विनम्र प्रयास को जारी रखने का थाली ऐसी वस्तु जिससे उसका सामना प्रतिदिन होता है, के उपयोग से बेहतर तरीका क्या हो सकता है?

11.2 “थालीनॉमिक्स: भारत में भोजन की थाली का अर्थशास्त्र” में आइए-यह एक ऐसा प्रयास है जिसमें यह परिकलन किया गया है कि भारत में पौष्टिक थाली के लिए आम आदमी को कितना खर्च करना पड़ता है। थाली अधिक वहन योग्य हुई है या कम? मुद्रास्फीति ने थाली के मूल्य को बढ़ाया अथवा घटाया है? क्या निरामिष भोजी थाली अथवा आमिषभोजी थाली दोनों पर मुद्रास्फीति का समान प्रभाव पड़ा है? क्या भारत के अलग-अलग राज्यों और क्षेत्रों में थाली के मूल्य में मुद्रास्फीति भी अलग-अलग रही है? थाली के मूल्य में परिवर्तन अन्न, सब्जियों, दालों, भोजन पकाने में उपयोग किए जाने वाले ईंधन में से किस घटक के मूल्य में परिवर्तन होने के कारण हुआ है? ये ऐसे प्रश्न हैं जो लुटियन दिल्ली में अथवा देश के किसी भीतरी भाग में सड़क किनारे ढाबे में संवाद का विषय बन सकते हैं। इनका उत्तर अब दिया जा सकता है और इस “स्वस्थ बहस कोई भी पक्ष लिया जा सकता है।

11.3 चूंकि जीवन के लिए भोजन आवश्यक होता है इसलिए थाली की तेजी से बढ़ती कीमत का प्रभाव सीधे आम आदमी (जनसाधारण) पर पड़ता है तथा इसे सुस्पष्ट रूप से देखा भी जा सकता है। वास्तव में खाद्य वस्तुएं तथा पेय पदार्थ उपभोक्ता मूल्य सूचकांक संयुक्त का 45.9 प्रतिशत भाग होते हैं। इसलिए सबसे प्रभावी विधि जिसके द्वारा जन साधारण को मूल्यों की प्रवृत्ति के विषय में समझाया जा सकता है वह यह है कि घर में तैयार की जाने वाली सम्पूर्ण भोजन की थाली भारतीय थाली, में कितना खर्च आता है के द्वारा यह बात स्पष्ट की जाए।

11.4 भारत की विविधता के कारण, यहां पकने वाले भोजन में भी विविधता है। यहां विभिन्न प्रकार को खाद्य

वस्तुओं को पकाया जाता है। इनमें विविध सब्जियों, अन्न, फल और मसालों का स्वादिष्ट मिश्रण होता है जिनकी उपज देश के विभिन्न स्थानों पर होती है। भारत के परंपरागत पौष्टिक आहार में अन्न और सब्जियों के साथ-साथ मछली, मांस और अंडों का स्वस्थ मिश्रण रहा है। हमने 25 राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के लिए ‘थाली’ के मूल्य का परिकलन किया है जिसमें अन्न (चावल या गेहूं), सब्जी (सब्जियां और अन्य घटक), दाल (दाल के साथ-साथ अन्य घटक) और इसके साथ-साथ उस ईंधन की लागत सम्मिलित की गई है जिसका उपयोग घरों में भोजन पकाने के लिए किया जाता है (बॉक्स 1)। हम दो प्रकार की थाली का विश्लेषण करते हैं—एक निरामिष भोजी (शाकाहारी) थाली और एक आमिषभोजी (मांसाहारी) थाली। निरामिष भोजी थाली में अन्न, सब्जी और दाल होती हैं तथा आमिषभोजी थाली में अन्न, सब्जी और आमिषघटक (मांस-गोश्त) होती है। हमने इन दो प्रकार की थालियों की कीमतों में वर्ष 2006-07 से अक्टूबर 2019-20 तक की अवधि में मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण किया है।

11.5 अखिल भारत में और चारों क्षेत्रों—उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में हमने देखा कि निरामिष थाली के निरपेक्ष मूल्य में वर्ष 2015-16 से कमी हुई है, हालांकि वर्ष 2019 में इसमें कुछ वृद्धि हुई है। ऐसा पिछले वर्षों में बढ़ते मूल्यों की प्रवृत्ति की तुलना में वर्ष 2015-16 के बाद सब्जियों और दाल के मूल्यों में व्यापक रूप से होने वाली कमी के कारण है। दरअसल इस वर्ष (अप्रैल-अक्टूबर 2019) थाली के मूल्य में वृद्धि होने का कारण दालों और सब्जियों के मूल्यों में होने वाली वृद्धि है। यदि निरामिषभोजी थाली के मूल्य में वर्ष 2015-16 तक व्याप्त वृद्धि जारी रहती तो एक औसत परिवार को, जिसमें पांच सदस्य¹ हैं, जिसमें प्रति व्यक्ति प्रतिदिन न्यूनतम दो पौष्टिक थालियों से भोजन करने हेतु प्रति वर्ष 10887 रु. अधिक खर्च करना पड़ता है दूसरे शब्दों में वर्ष 2015-16 के बाद औसत परिवार को खाद्य कीमतों में नरमी से औसतन प्रतिवर्ष 10887 रु. का लाभ हुआ है। इसी प्रकार इसी अवधि में औसत परिवार जिसमें प्रति व्यक्ति प्रति दिन दो पौष्टिक आमिषभोजी थालियों का सेवन किया जाता है उसे इसी अवधि में लगभग 11787 रूपये का लाभ हुआ है। दूसरा पैमाने के तौर पर हमने एक औसत औद्योगिक श्रमिक की अपने पांच सदस्यों के परिवार हेतु दो थालियां खरीदने की क्षमता की जांच की। इस

¹ प्रति परिवार पांच सदस्यों की पूर्वाधारणा इस तथ्य पर आधारित है कि भारत में औसत परिवार में 4.8 व्यक्ति होते हैं (जनगणना 2011 के अनुसार)

पैमाने के अनुसार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि निरामिषभोजी थाली की वहन क्षमता में वर्ष 2006-07 से वर्ष 2019-20 की अवधि में 29 प्रतिशत का सुधार हुआ है और आमिषभोजी थाली की क्रय क्षमता में 18 प्रतिशत का सुधार हुआ है। यहां नोट करने वाली बात

यह है कि हालांकि आमिषभोजी थाली महंगी होती है और निरामिषभोजी थाली सस्ती होती है, लाभ व इसके कारण वहन क्षमता में सुधार इन थालियों की कीमतों में वर्ष 2015-2016 तक की अवधि में व्याप्त प्रवृत्तियों के कारण हुआ है।

बॉक्स 1: थालियों की कीमतों का निर्धारण

इन थालियों का निर्माण अप्रैल, 2006 से अक्टूबर, 2019 तक की अवधि में श्रमिक ब्यूरो, भारत सरकार से 25 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में 78 केंद्रों हेतु प्राप्त औसत मासिक मूल्य डाटा के आंकड़ों (जोकि औद्योगिक श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक को तैयार करने के लिए उपयोग किया जाते हैं) की सहायता से किया गया है। विभिन्न वस्तुओं (पण्य पदार्थ) का औसत मासिक मूल्य किसी प्रदत्त केंद्र में चयनित बाजारों के चयनित दुकानों में व्याप्त उस मद की विनिर्दिष्ट किस्म के खुले बाजार में मूल्यों का औसत है। राशन की मदों के लिए केंद्रों हेतु मूल्य “भारित औसत मूल्य” है। यहां “भार” औसत श्रमिक वर्ग परिवार की आधार वर्ष (2001) की आवश्यकताओं के संबंध में ‘सार्वजनिक वितरण प्रणाली’ के माध्यम से उपलब्ध होने वाली मात्रा और खुले बाजार में विभिन्न केंद्रों में प्राप्त मात्रा का अनुपात है।

दो प्रकार की थालियों का विश्लेषण किया गया-निरामिष (शाकाहारी) थाली तथा आमिषभोजी (मांसाहारी) थाली। थाली तैयार करने के लिए घटकों की मात्रा (एन.आई.एन, 2011) की रिपोर्ट में भारतीयों के लिए दिए गए आहार-विषयक दिशानिर्देशों के अनुसार थी। हमने कठोर परिश्रम करने वाले व्यस्क पुरुष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा है। इसलिए हो सकता है कि प्राक्कलित मूल्य परिवार के भोजन के खर्च को कम आकलित करने के स्थान पर अधिक आकलित करें। प्रत्येक थाली के लिए हमने अन्न, सब्जी, दाल और आमिष पदार्थों की मात्रा का निर्धारण इस प्रकार किया है, जिससे कि दिन में कम से कम दो बार किए गए भोजन से मनुष्य शरीर के लिए आवश्यक इन पदार्थों की दैनिक आवश्यकताओं पूर्ति होती रहे। निरामिषभोजी थाली में अन्न की मात्रा (300 ग्राम) सब्जियों की मात्रा (150 ग्राम) और दाल की मात्रा (60 ग्राम) है। दो प्रकार के अन्न लिए गए हैं-चावल और गेहूं। आलू, प्याज, टमाटर को मुख्य सब्जियों और बैंगन, बंदगोभी, फूलगोभी व भिंडी को अतिरिक्त सब्जियों के रूप में लिया गया है, इससे सभी मौसम, पूरे भारत में उपलब्धता व सामान्य उपभोग सम्मिलित हो जाते हैं। दालों में अरहर, चने की दाल, मसूर दाल, मूंग दाल और उड़द की दाल का चयन किया गया है। अन्य वस्तुओं में सब्जी व दाल, से खाद्य पदार्थ बनाने हेतु आवश्यक मसाले शामिल हैं। भोजन पकाने में सरसों का तेल, मूंगफली का तेल और नारियल के तेल का चयन किया गया है, यह चयन राज्य-वार भोजन में उपयोग किए जाने वाले तेल के प्रकार के अनुसार किया जाता है। आमिषभोजी व्यंजनों के लिए मुर्गी के अंडों, मछली (ताजी) और बकरे के मांस का चयन किया गया है क्योंकि इसको भोजन के रूप में सभी प्रांतों व धर्मों में खाया जाता है। आमिषभोजी थाली में दाल के स्थान पर गोश्त (60 ग्राम) या कोई आमिष घटक होता है, शेष घटकों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। ईंधन के लिए हमने घरेलू-गैस के मूल्य के साथ-साथ जलाऊ लकड़ी का चयन किया है, जिनके (आंकड़े) हमें उपलब्ध हैं। वैसे भी यहां विश्लेषण में मदों की मात्रा अधिक महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि घटकों के इस प्रकार “भार” को कम या अधिक किया जा सकता है कि कीमत परिवर्तन की दिशा अपरिवर्तित रहे।

भोजन की प्रत्येक थाली में (300 ग्राम) अन्न का ‘भारित मूल्य’ एन.एस.एस. के पारिवारिक उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण के 68वें राउंड के आंकड़ों में चावल व गेहूं के राज्यवार मात्रात्मक भारों के अनुसार निर्धारित किया गया है। प्रत्येक राज्य के लिए प्रति व्यक्ति गेहूं और चावल की औसत मासिक खपत का परिकलन घरेलू सर्वेक्षण के आंकड़ों से किया गया है। इसी प्रकार सब्जियों के साथ-साथ दालों के अंश के भारित मूल्य का परिकलन इन्ही आंकड़ों के आधार पर किया गया है। इसी प्रकार आमिषभोजी थाली के भोजन के लिए भी विभिन्न मदों का परिकलन किया गया है। घरों में भोजन के प्रत्येक समय में होने वाली ईंधन की खपत का परिकलन किसी परिवार में उपयोग की जाने वाली एल.पी.जी. और जलाऊ लकड़ी की माह में उपयोग की गई मात्रा घर में बनाए गए औसत भोजनो की मात्रा से विभाजन द्वारा किया है। यह मात्रा एन.एस.एस. की 68वीं रिपोर्ट के डाटा के अनुसार है। इसकी सहायता से एक भोजन हेतु ईंधन की भारित औसत कीमत की गणना की गई है।

उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण से प्राप्त भारों को कीमत आंकड़ों के साथ प्रयोग करके मुख्य घटकों की भारित कीमतें ज्ञात की गई हैं। अन्य घटकों का भार थालियों को बनाने में उपयोग होने वाली मानकीकृत विधियों पर आधारित है। (तालिका क)

थाली की कीमत संबंधित थाली को तैयार करने में लगे सभी घटकों पर हुए कुल खर्च को दर्शाती है। थाली की राज्यवार

तालिका क: अन्य अवयव

थाली के घटक	अन्य अवयव
सब्जी	हल्दी 0.2 ग्राम, सूखी मिर्च 0.5 ग्राम, नमक-1 ग्राम, धनिया 0.5 ग्राम, खना पकाने का तेल-10 ग्राम
दाल	हल्दी 0.2 ग्राम, नमक 0.2 ग्राम, सूखी मिर्च 0.2 ग्राम, जीरा/सरसों के दाने 1 ग्राम, तेल 10 ग्राम
मांसाहारी	हल्दी 0.1 ग्राम, सूखी मिर्च 0.2 ग्राम, नमक 0.5 ग्राम, धनिया 0.2 ग्राम, मिश्रित मसाले 0.1 ग्राम, अदरक 0.5 ग्राम, लहसुन 0.5 ग्राम, प्याज 15 ग्राम, टमाटर 12 ग्राम, खना पकाने का तेल 10 ग्राम

कीमतों को व्यंजन विधियों, घटकों, भाarों पर आधारित राज्यवार गणनाओं से ज्ञात किया गया है। क्षेत्रवार व अखिल भारतीय थाली का निर्माण सभी राज्य की थाली की कीमतों के भारित औसत से किया गया है जहां राज्यवार जनसंख्या का उपयोग भार के तौर पर किया गया है।

प्रति परिवार पांच सदस्यों के पूर्वधारण इस तथ्य पर आधारित है कि भारत में औसत परिवार में 4.9 प्रतिशत व्यक्ति होते हैं (जनगणना 2011 के अनुसार)

थाली की कीमतें

11.6 वर्ष 2015-16 को भोजन की कीमतों की गतिकी में तब्दीली के वर्ष के रूप में लिया जा सकता है। विश्लेषण अवधि के दौरान पश्चात कृषि क्षेत्र की उत्प.

ादकता को बढ़ाने के लिए तथा अच्छी और अधिक पारदर्शी कीमत-खोज हेतु कृषि बाज़ार में कुशलता और प्रभाविकता को बढ़ाने के लिए कई सुधारात्मक उपाय किये गए हैं (तालिका-1) ये अखिल भारत स्तर पर थाली की कीमतों में आई मंदी में परिलक्षित होते हैं। (चित्र 1)। इस विश्लेषण के लिए हम वर्ष 2006-07 से आंकड़े लेते हैं, ताकि हमारे पास स्थिति परिवर्तन से पहले की कीमत प्रवृत्ति का विश्लेषण करने के लिए 10 वर्ष के आंकड़े हों।

तालिका 1: कृषि उत्पादकता और कृषि बाजार की कुशलता को बढ़ाने के लिए उठाए गए कुछ मुख्य कदम।

क्र. स.	योजना का नाम	विवरण
1	प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (पीएम-आशा)	2018 में शुरू की गई पीएम-आशा योजना में तीन उप-योजनाएं सम्मिलित हैं मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस), कीमत की कमी हेतु *भुगतान योजना (पीडीपीएस) और निजी अधिप्रापण एवं भंडार योजना (पीडीपीएस) को प्रायोगिक रूप से चलाना। पीएसएस के अन्तर्गत दालों, तिलहन, कोपरा का भौतिक अधिप्रापण राज्य सरकार की सक्रिय भूमिका से केन्द्रीय नोडल एजेंसियों द्वारा किया जाता है। पीडीपीएस के अन्तर्गत वे सभी तिलहन शामिल हैं। जिसके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य अधिसूचित किया जाता है। इसके अन्तर्गत न्यूनतम समर्थन मूल्य तथा ब्रिकी/मॉडल कीमत के बीच के अन्तर को पारदर्शी नीलामी प्रक्रिया के जरिए अधिसूचित बाजार यार्ड में अपने उत्पादों को बेचने वाले पूर्व किसानों को किया जाता है।
2	प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) प्रति बूंद अधिक फसल	पीएमकेएसवाई को वर्ष 2015-16 में लागू किया गया था। इसमें सुनिश्चित सिंचाई के अधीन कृषि योग्य भूमि के विस्तार, पानी की बर्बादी को कम करने के लिए खेत में पानी के उपायोग संबंधित दक्षता को सुधारने, संकेंद्रित-सिंचाई तथा अन्य जल बचत प्रौद्योगिकियों जल स्रोतों का पुनर्भरण बढ़ाने तथा संधारणीय जल संरक्षण प्रथाओं को शुरू करने के अंगीकरण को बढ़ाने जैसे उपायों से जल उपयोग दक्षता को बढ़ाने पर ध्यान है।

3	<p>प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमबीवाई)</p> <p>पीएमएफबीवाई को कृषि फसलों को बेहतर बीमा कवरेज प्रदान और उसके द्वारा जोखिम न्यूनीकरण के लिए वर्ष 2015-16 में शुरू किया गया था। पीएमएफबीवाई से कुल 69.9 लाख किसान लाभान्वित हुए हैं। इस योजना का उद्देश्य किसानों को व्यापक कवरेज प्रदान करना है।</p>
4	<p>मृदा स्वास्थ्य कार्ड</p> <p>मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना को देश में सभी किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करने के लिए राज्य सरकार को सहायता देने हेतु वर्ष 2014-15 में शुरू किया गया था। मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को उनकी मिट्टी के पोषक तत्वों पर सूचना देने के साथ उनकी मृदा स्थिति के लिए उपयोग किए जाने वाले पोषक तत्वों की उपयुक्त मात्रा पर अनुशंसाएं भी प्रदान करता है।</p>
5	<p>ई-नैम राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नैम)</p> <p>ई-नैम पारदर्शी कीमत खोज हेतु कृषि वस्तुओं के लिए एक ऑनलाइन व्यापार प्लेटफार्म है। अब तक 16 राज्यों एवं 2 संघ-शासित प्रदेशों में 585 थोक विनियमित बाजारों को ई-नैम से जोड़ा जा चुका है।</p>
6	<p>राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एन एफ एस एम)</p> <p>राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन चावल, गेहूँ, दलहल एवं मोटे अनाज के उत्पादन में वृद्धि हेतु वर्ष 2007-08 से कार्यान्वित है। इसे वर्ष 2014-15 में पुनः डिजाइन किया गया था।</p>
7	<p>राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एन एफ एस ए)</p> <p>राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम को वर्ष 2013 में अधिनियमित तथा वर्ष 2014 में क्रियान्वित किया गया था। यह उच्च सब्सिडी दर पर खाद्यान्न प्राप्त करने हेतु 67 प्रतिशत जनसंख्या (ग्रामीण क्षेत्रों में 75 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्रों में 50 प्रतिशत) को कानूनी अधिकार प्रदान करता है। इस अधिनियम के अंतर्गत प्राथमिकता वाले परिवारों के लिए प्रति व्यक्ति प्रतिमाह 5 कि. ग्रा. की दर से तथा ए ए वाई परिवारों को 35 किग्रा प्रति व्यक्ति प्रति माह दर से पोषक अनाज, गेहूँ और चावल क्रमशः 1 रुपए, 2 रुपए तथा 3 रुपए की उच्च सब्सिडी युक्त कीमत पर आर्बिट्रि किए जाते हैं। इस अधिनियम के तहत 2011 की जनगणना के जनसंख्या संबंधी आंकड़ों को आधार बनाया गया है। यह अधिनियम सभी 36 राज्यों/संघ शासित राज्यों में कार्यान्वित किया गया है। तथा इससे लगभग 81.35 करोड़ व्यक्तियों को लाभ पहुंचा है।</p>

स्रोत: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, उपभोक्ता मामलों का मंत्रालय, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण

11.7 यदि कीमतें 2015-16 से पहले की दर से बढ़ती रहती तो क्या होता, इसे हम देखने हेतु 2015-16 से पूर्व 10 वर्षों हेतु रेखीय प्रवृत्ति ज्ञात करते हैं व उसे उस वर्ष से आगे प्रक्षेपित करते हैं। इससे हमें यह संकेत मिलता है कि यदि सारणी 1 में वर्णित नीतियां कार्यान्वित नहीं होती हैं तो कीमतें क्या होती। इसकी वास्तविक कीमतों से तुलना करने पर हम उस सांकेतिक लाभ की गणना कर सकते हैं जिसे थाली के उपभोक्ता ने 2015 से कृषि नीति कार्यक्रम के कारण प्राप्त किया है।

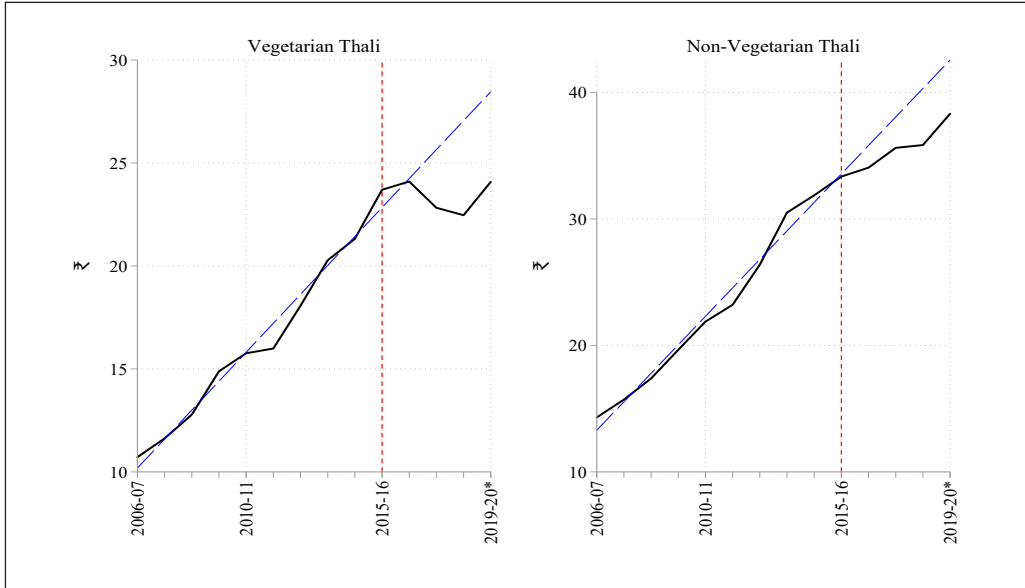
11.8 चित्र 1 में वर्ष 2015-16 लाल बिन्दुकित ऊर्ध्वाधर रेखा द्वारा दर्शाया गया है। नीली डैश रेखा 2015-16 तक रैखिक फिट है तथा तब से पांच वर्षों

के लिए अनुमानित (प्रक्षेपित) है। 2015-16 की अनुवर्ती अवधि के लिए हम प्रक्षेपित रेखा जो कि प्रतितथ्यात्मक कीमत देती हैं, तथा वास्तविक के बीच अन्तराल की गणना करते हैं। अखिल भारतीय स्तर पर शाकाहारी थाली के लिए 2015-16 के पश्चात लगभग 3 रूपये प्रति थाली का औसत लाभ था (2016-17 में 0.1, रु. 2017-18 में 2.8 रु., 2018-19 में 4.6 रु., तथा 2019-20 में 4.4 रु.) (चित्र 1)। यह पहली नजर में कम प्रतीत हो सकता है परन्तु परिवारों हेतु भोजन की लागत में बड़ी गिरावट है। इसको समझने के लिए मान लीजिए कि प्रतिनिधि शाकाहारी परिवार में पांच लोग हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति दिन में दो बार भरपेट खाना खाता है। इस परिवार के लिए औसत

वार्षिक लाभ 2015-16 की अनुवर्ती अवधि के लिए 10887 रु. के आसपास होगा। यह लाभ औसतन एक श्रमिक की वार्षिक मजदूरी का 6.5 प्रतिशत है। (तालिका-2). मांसाहारी (आमिष) थाली के लिए

वर्ष 2016-17 में प्रति थाली पर 1.8 रु., 2017-18 में 2.4 रु., 2018-19 में 4.5 रु. तथा, 2019-20 में 4.2 रु. का लाभ हुआ। इस प्रकार 5 सदस्यों के परिवार में लगभग रु. 11787 का औसत लाभ होगा।

चित्र 1: अखिल भारतीय स्तर पर थाली का मूल्य



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: नीली डेश लाइन 2015-16 तक रेखीय प्रवृत्ति को और इसके बाद अनुमान दर्शाती है। लाल बिंदुओं वाली रेखा 2015-16 को व्यक्त करती है।

*अप्रैल-अक्तूबर, 2019

तालिका 2: एक दिन में पांच सदस्यों वाले परिवार के लिए अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिदिन दो थाली के लाभ

वर्ष	लाभ रु. में	श्रमिक की वार्षिक आय के अनुपात (प्रतिशत में) के रूप में	लाभ रु. में	श्रमिक की वार्षिक आय के अनुपात (प्रतिशत में) के रूप में
शाकाहारी थाली			मांसाहारी थाली	
2016-17	526.9	0.4	6408.2	4.3
2017-18	10304.3	6.5	8910.3	5.6
2018-19	16744.4	10	16318.2	9.7
2019-20*	15972.3	9	15511.5	8.7

स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: 2019-20 हेतु गणनाएं अप्रैल-अक्तूबर, 2019 की अवधि के लिए मूल्यों पर आधारित परिकलन हैं।

11.9 भारत एक विविधता वाला देश है और इस कीमतों के रुझानों में क्षेत्रावार अन्तर को देखना आवश्यक है। इसलिए भारत के राज्यों को भौगोलिक स्थिति के आधार पर चार क्षेत्रों में बांटा गया है:

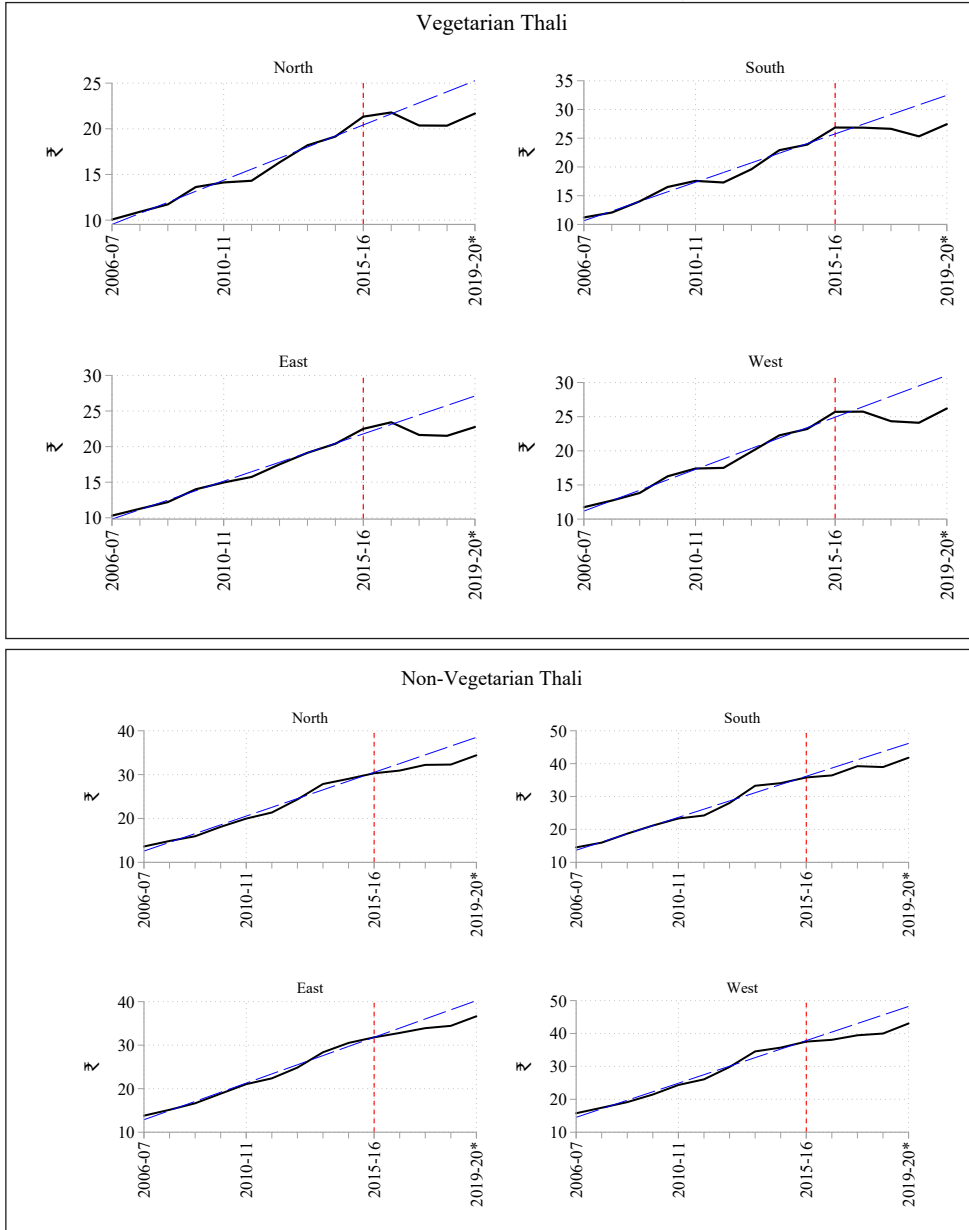
- उत्तर क्षेत्र में चंडीगढ़, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, मध्य प्रदेश, पंजाब और उत्तर प्रदेश शामिल है।
- दक्षिण क्षेत्र में कर्नाटक, केरल, पुडुचेरी,

तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना शामिल है।

- पूर्व क्षेत्र में असम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा, त्रिपुरा व पश्चिम बंगाल शामिल है।
- पश्चिम क्षेत्र में गोवा, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र शामिल है।

11.10 समूचे क्षेत्र में इसी प्रकार के लाभ देखे जा सकते हैं। केवल 2016-17 में शाकाहारी थाली के मामले में उत्तर-क्षेत्र और पूर्वी क्षेत्रों को छोड़कर (चित्र 2 व तालिका 3)। किसी वर्ष में सर्वाधिक लाभ दक्षिण क्षेत्र में 2018-19 में शाकाहारी के मामले में देखा गया, जो कि एक श्रमिक की वार्षिक आय का 12 प्रतिशत थी।

चित्र 2: क्षेत्रीय स्तर पर थाली का मूल्य



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: नीली डेश लाइन 2015-16 तक रेखीय प्रवृत्ति को और इसके बाद अनुमान दर्शाती है। लाल बिंदुओं वाली रेखा 2015-16 को व्यक्त करती है।

अप्रैल-अक्तूबर, 2019

तालिका 3: एक दिन में पांच सदस्यों वाले परिवार के लिए दो थाली के साथ क्षेत्रवार लाभ

वर्ष	श्रमिक की वार्षिक आय के अनुपात (प्रतिशत में) के तौर पर		श्रमिक की वार्षिक आय के अनुपात (प्रतिशत में) के तौर पर	
	लाभ रु. में		लाभ रु. में	
उत्तरी क्षेत्र				
	<i>शाकाहारी थाली</i>		<i>मांसाहारी थाली</i>	
2016-17	-578.7	-0.4	5,795.3	4.3
2017-18	9,055.1	6.2	8,348.0	5.8
2018-19	13,528.9	8.8	15,354.9	10
2019-20*	13,087.3	8	14,920.3	9.2
दक्षिणी क्षेत्र				
	<i>शाकाहारी थाली</i>		<i>मांसाहारी थाली</i>	
2016-17	2,166.1	1.5	8,169.5	5.7
2017-18	9,031.2	6	7,035.0	4.7
2018-19	19,935.9	12.4	17,118.1	10.7
2019-20*	18,361.6	10.8	15,865.5	9.3
पूर्वी क्षेत्र				
	<i>शाकाहारी थाली</i>		<i>मांसाहारी थाली</i>	
2016-17	-1,091.9	-0.7	4,044.1	2.6
2017-18	10,254.8	6.1	7,705.6	4.6
2018-19	15,558.5	8.8	13,454.7	7.6
2019-20*	15,886.0	8.5	13,123.8	7.1
पश्चिमी क्षेत्र				
	<i>शाकाहारी थाली</i>		<i>मांसाहारी थाली</i>	
2016-17	2,612.9	1.6	8,632.2	5.1
2017-18	13,317.6	7.5	13,053.8	7.4
2018-19	19,724.3	10.5	20,563.7	10.9
2019-20*	17,661.4	8.9	18,885.2	9.5

स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिपपणी: 2019-20 हेतु गणनाएं अप्रैल-अक्टूबर, 2019 की अवधि के लिए मूल्यों पर आधारित हैं।

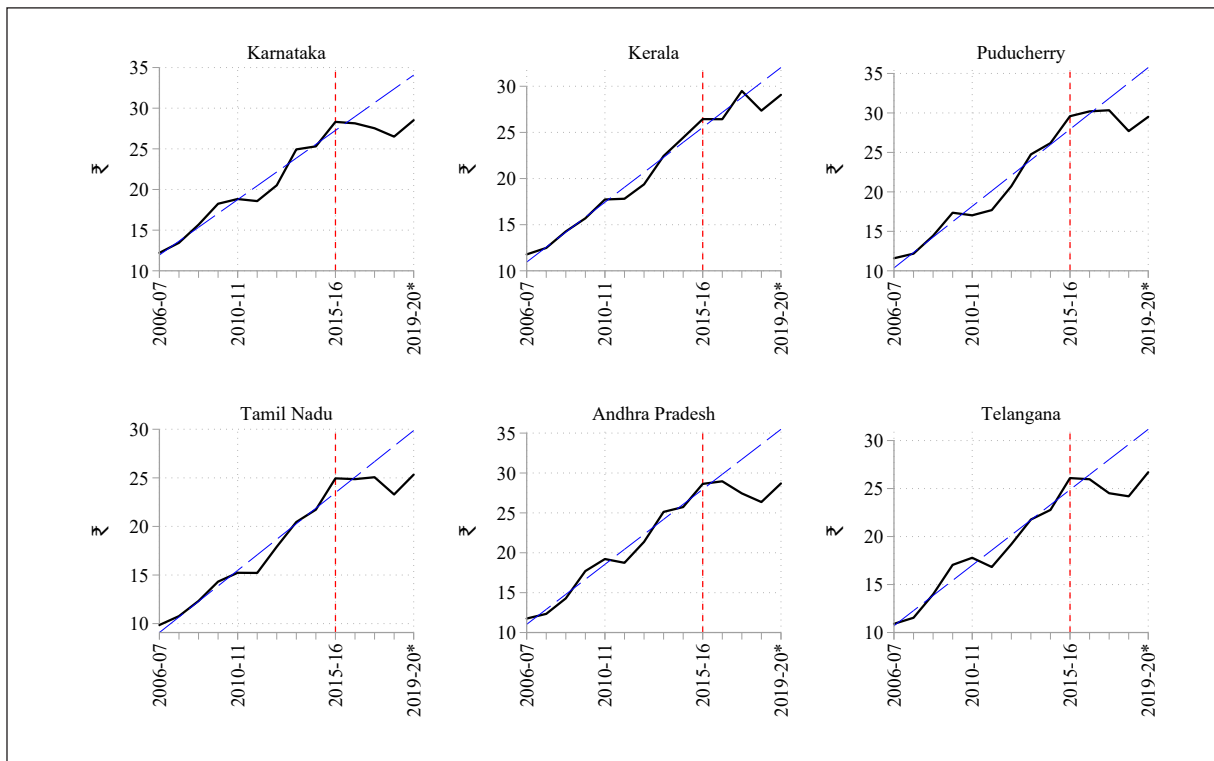
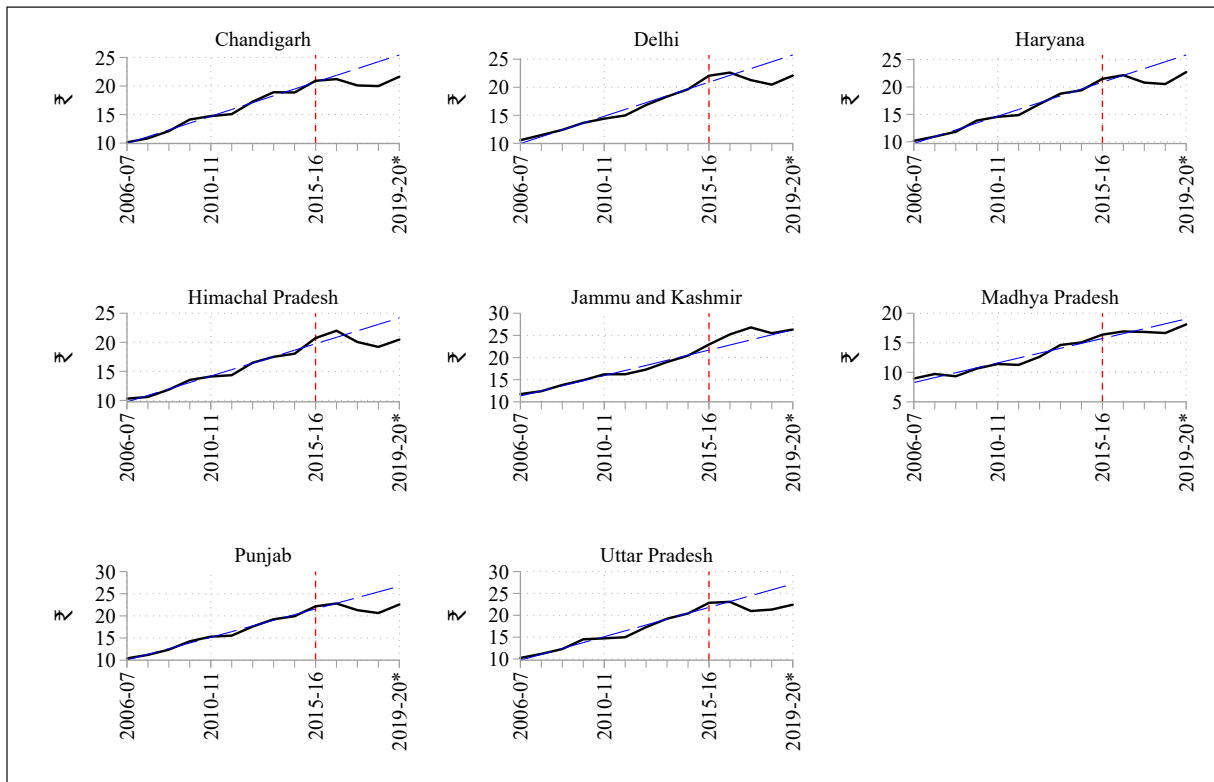
चित्र 3 और 4 राज्यवार थाली के मूल्यों को दर्शाते हैं। इनमें समान प्रवृत्तियां देखने को मिलती हैं।

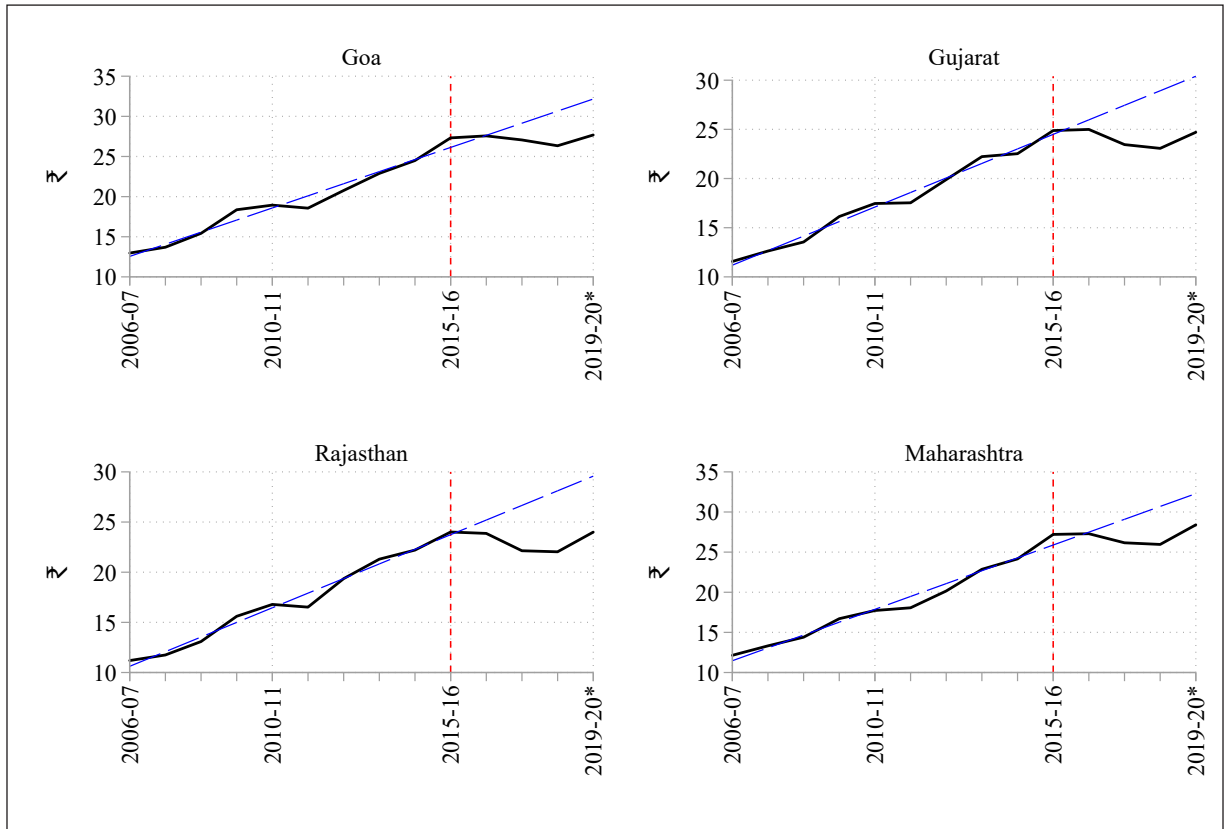
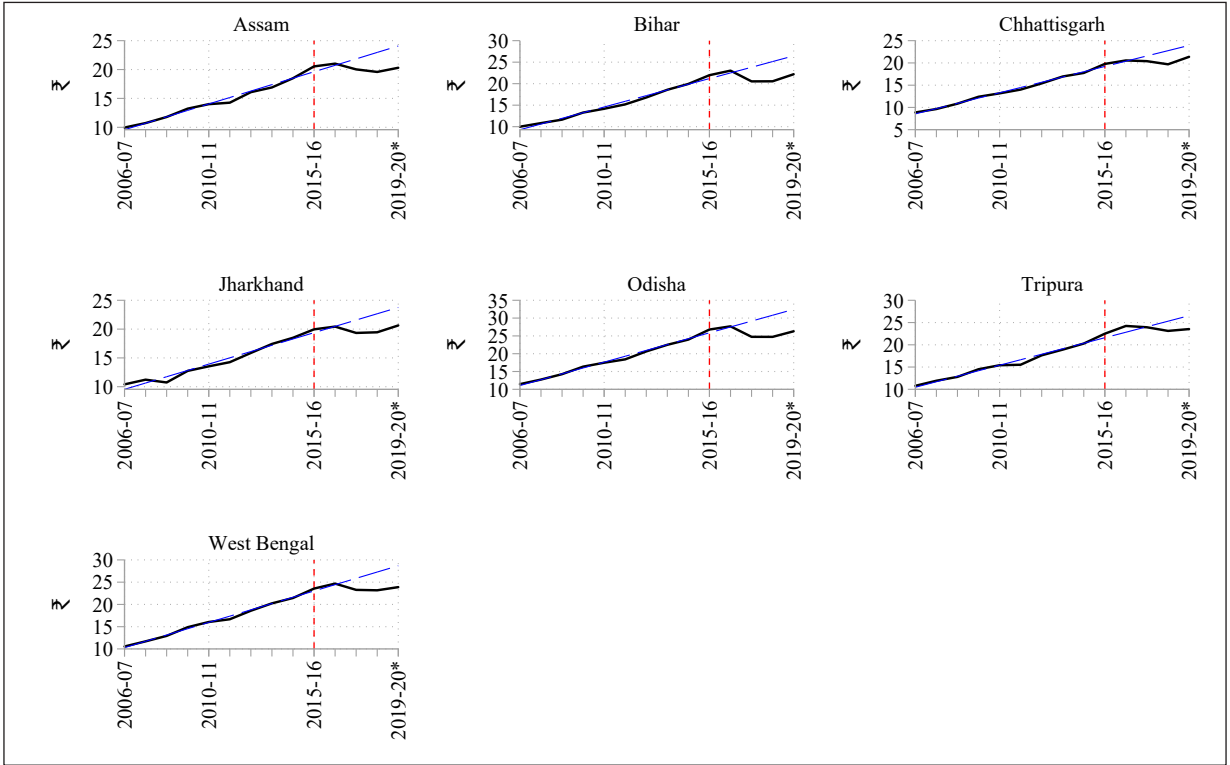
थाली की वहनीयता

11.11 हालांकि थालियों की कीमतों से यह पता चलता है कि एक व्यक्ति को थाली की कितनी लागत आएगी यह जानना कि मूल्य घट रहे हैं या बढ़ रहे हैं इस बात की जानकारी देने के लिए अपर्याप्त है कि एक आम आदमी बदतर स्थिति में है या बेहतर स्थिति में है। यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि उसी अवधि में थालियों के

मूल्यों की तुलना में व्यक्तियों की आय में भी कैसा परिवर्तन आया है। इस उद्देश्य के लिए हम यह देख सकते हैं कि श्रमिक को अपनी दैनिक मजदूरी का कितना हिस्सा अपने परिवार के सदस्यों के लिए दो थालियों को खरीदने के लिए आवश्यक होगा। यदि ये मैट्रिक समय के साथ गिरता है तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि स्थिति बेहतर है। दूसरी ओर यदि यह मैट्रिक घटता है तो स्थिति विपरीत होगी। हमने इस मैट्रिक के

चित्र 3: शाकाहारी थाली की राज्य वार कीमतें



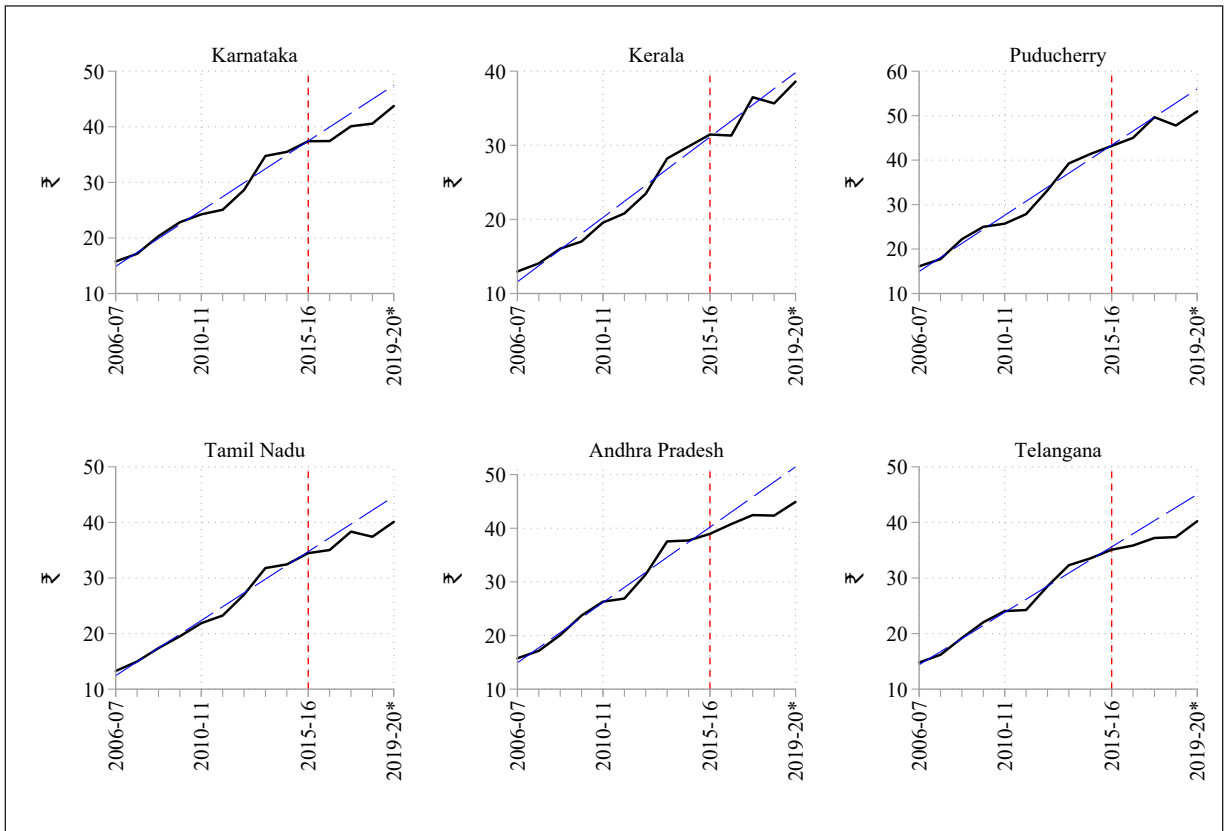
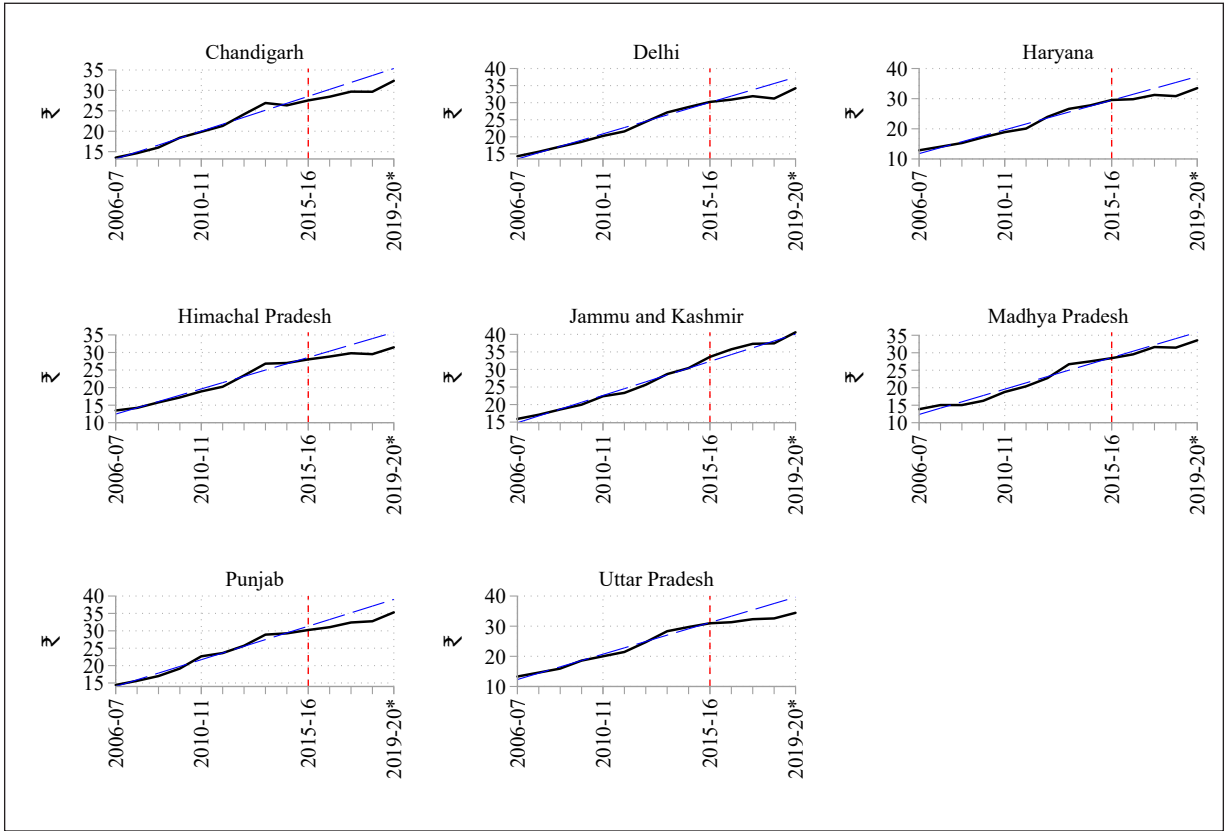


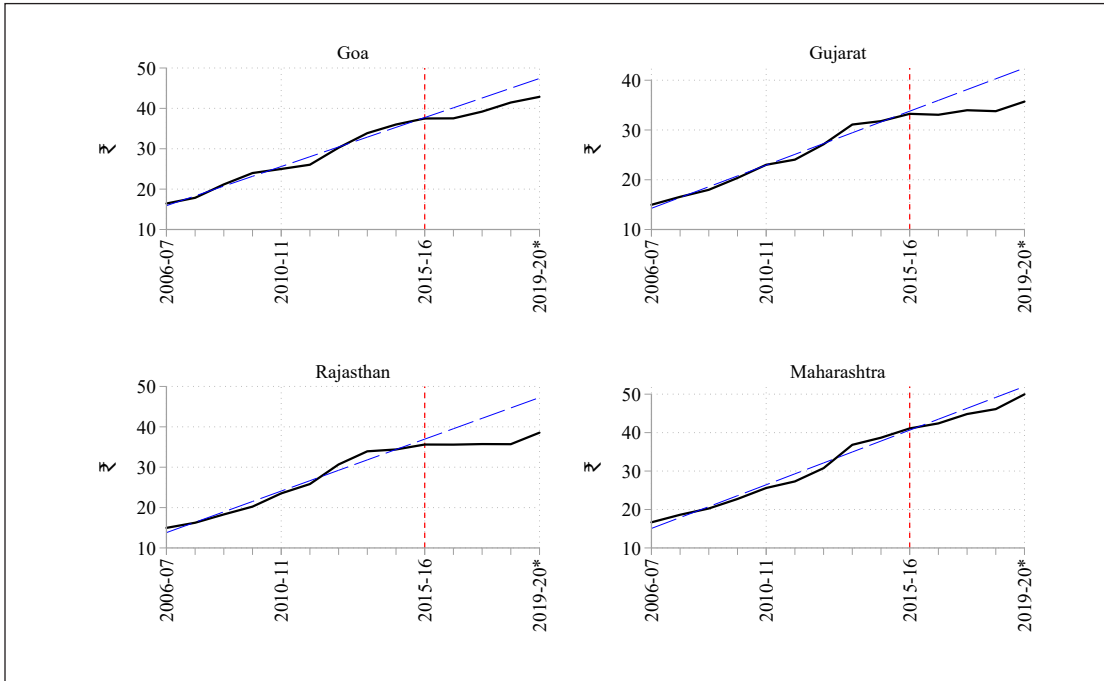
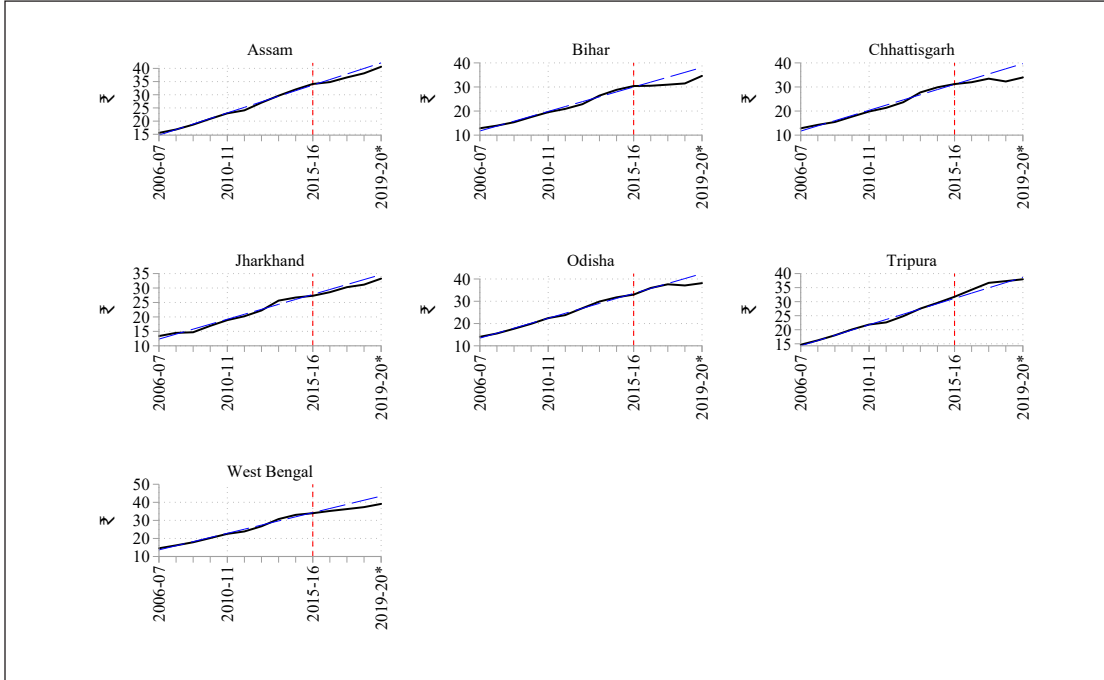
स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: नीली डेश लाइन 2015-16 तक रेखीय प्रवृत्ति को और इसके बाद अनुमान दर्शाती है। लाल बिंदुओं वाली रेखा 2015-16 को व्यक्त करती है।

अप्रैल-अक्टूबर, 2019

चित्र 4: मांसाहारी थाली का राज्यवार मूल्य





स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: नीली डेश लाइन 2015-16 तक रेखीय प्रवृत्ति को और इसके बाद अनुमान दर्शाती है। लाल बिंदुओं वाली रेखा 2015-16 को व्यक्त करती है।

अप्रैल-अक्टूबर, 2019

उस वर्ष में 2 थालियों के मूल्य को उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण से प्राप्त दैनिक मजदूरी के आंकड़ों (2017-18 तक उपलब्ध और 2019-20 तक ज्ञात प्रवृत्ति के आधार पर अनुमानित) से भाग देकर बनाया है। हमने मजद.

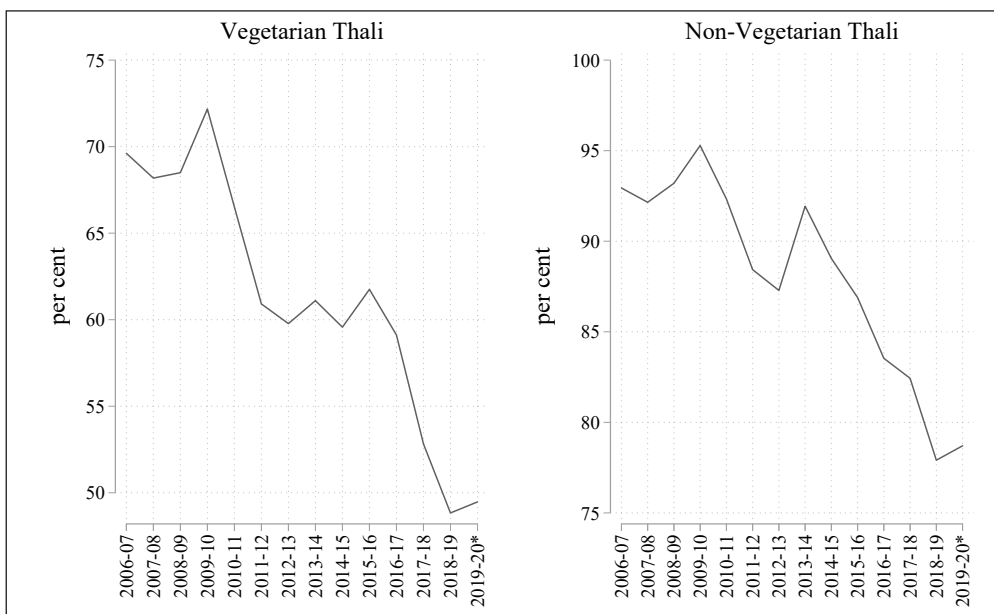
ूरियों के लिए ए एस आई के आंकड़ों का प्रयोग किया है क्योंकि खाद्य मदों के मूल्यों को सी पी आई-डब्ल्यू के निर्माण के लिए एकत्र किए गए आंकड़ों से लिया गया है। विश्लेषण में शामिल की गई समयावधि के

लिए ए एस आई व्यवस्थित विनिर्माण क्षेत्र में नियोजित श्रमिकों को वार्षिक मजदूरी का आकलन देता है। हमने श्रमिकों की कुल संख्या से श्रमिकों की दैनिक मजदूरी को भाग देकर श्रमिकों की वार्षिक मजदूरी ज्ञात की हैं। हमने इस प्रत्येक श्रमिक की वार्षिक मजदूरी को 365 दिनों से भाग देकर एक मजदूर की दैनिक मजदूरी निकाली है। चित्र 5 यह दर्शाता है पिछले वर्षों में थाली की वहन क्षमता में वृद्धि हुई है। शाकाहारी थाली के मामले में हमने देखा है कि जो व्यक्ति अपने पांच सदस्य के परिवार के लिए दो थाली पर अपनी मजदूरी का 70% को व्यय करता है वह अपनी दैनिक मजदूरी के 50% से ही थालियों की उसी संख्या को वहन कर सकता है। इसी प्रकार मांसाहारी थाली की वहन क्षमता में भी वृद्धि हुई है। तथा पांच सदस्यों हेतु दो थाली खरीदने हेतु आवश्यक मजदूरी का अंश

2006-07 तथा 2019-20 के मध्य 93 प्रतिशत से घटकर 79 प्रतिशत पर आ गया है।

11.12 वर्ष 2019-20 में (अप्रैल-अक्टूबर 2019) सबसे अधिक किफायती थाली झारखण्ड में थी; झारखण्ड में दो शाकाहारी थालियों के लिए पांच सदस्यों वाले परिवार के लिए श्रमिक की दैनिक मजदूरी का लगभग 25% की जरूरत थी (चित्र 6)। मांसाहारी थाली भी झारखण्ड में सबसे अधिक वहनीय थी (चित्र 7)। 2006-07 और 2019-20 (अप्रैल-अक्टूबर) के बीच तुलना करने पर पता चलता है कि शाकाहारी थाली सभी विचाराधीन राज्यों में और अधिक किफायती बन गई है। मांसाहारी थाली के मामले में इस अवधि के दौरान बिहार और महाराष्ट्र को छोड़कर सभी राज्यों में वहन क्षमता बढ़ी है। इन दो राज्यों में मामूली गिरावट देखी गई हैं।

चित्र 5: (अखिल भारत स्तर) पांच सदस्य वाले परिवार के लिए दो थालियां खरीदने हेतु श्रमिक की एक दिन की मजदूरी का आवश्यक हिस्सा थाली की वहनीयता



स्रोत: समीक्षा परिकलन

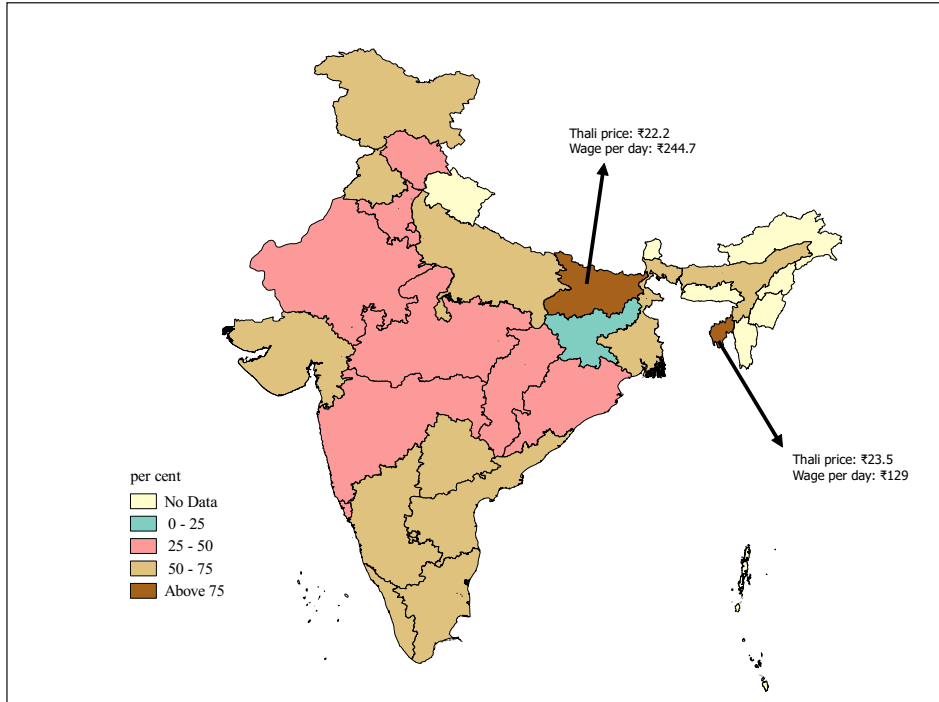
टिप्पणी: वर्ष 2019-20 हेतु गणनाएं अप्रैल-अक्टूबर, 2019 की अवधि के लिए मूल्यों पर आधारित हैं।

थाली के घटकों के मूल्यों का रुझान

11.13 थालियों के मूल्यों में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय रुझानों को देखते हुए यह देखना हमें और गहन जानकारी देगा कि थालियों की कीमतों में देखी गई प्रवृत्तियों में किन घटकों का योगदान है। हमने यह

देखा कि अखिल भारतीय स्तर पर लगभग सभी घटकों के मूल्य 2015-16 (चित्र: 8) से अनुमानित मूल्यों की तुलना में कम रहे हैं। दाल के मूल्य 2016-17 तक बढ़े रहे, जिसके पश्चात् एक बड़ी गिरावट देखी गई। इसी प्रकार का स्वरूप पूरे देश

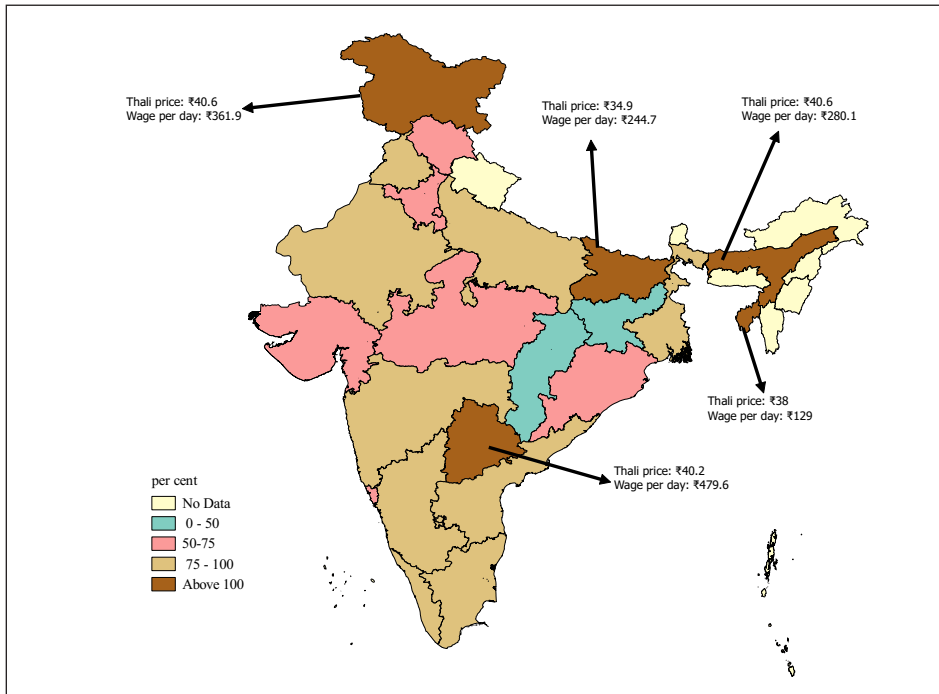
चित्र 6: पांच सदस्यीय परिवार को दो शाकाहारी थालियां उपलब्ध कराने में खर्च एक श्रमिक की मजदूरी का अंश (अखिल भारतीय स्तर पर) वर्ष 2019-20 में



स्रोत: समीक्षा परिकलन

नोट: अप्रैल-अक्तूबर 2019

चित्र 7: पांच सदस्यीय परिवार को दो शाकाहारी थालियां उपलब्ध कराने में खर्च एक श्रमिक की मजदूरी का अंश (अखिल भारतीय स्तर पर) वर्ष 2019-20 में



स्रोत: समीक्षा परिकलन

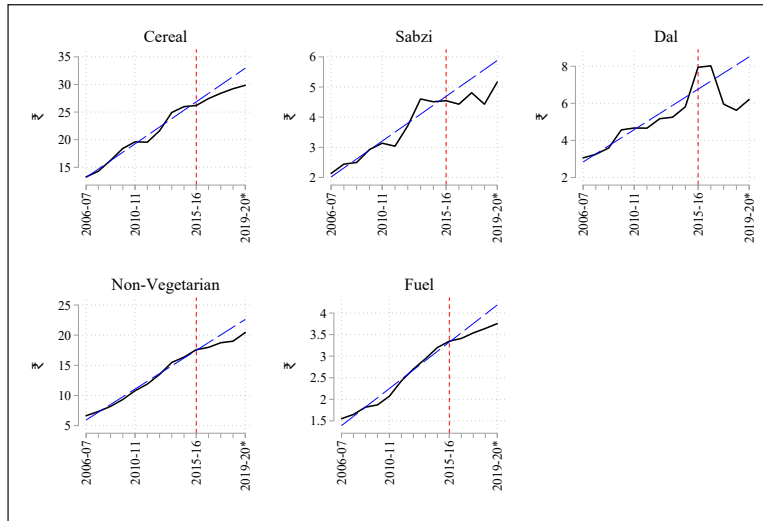
नोट: अप्रैल-अक्तूबर 2019

में देखा गया (चित्र 9-12) हालांकि अन्य क्षेत्रों में सब्जियों के मूल्य स्पष्ट रूप से अनुमानित मूल्य से नीचे रहे, दक्षिण क्षेत्र में सब्जियों के मूल्यों में उतार-चढ़ाव अधिक रहे हैं तथा सब्जी के मूल्य अनुमानित मूल्यों से अधिक रहे हैं।

थाली स्फीति

11.14 थाली स्फीति (थाली के मूल्यों में वर्ष-दर वर्ष वृद्धि), जोकि हमारे विश्लेषण की प्रारंभिक अवधि के दौरान उच्च स्तर पर रही, में काफी गि.

चित्र 8: थाली घटकों के अखिल भारतीय मूल्य

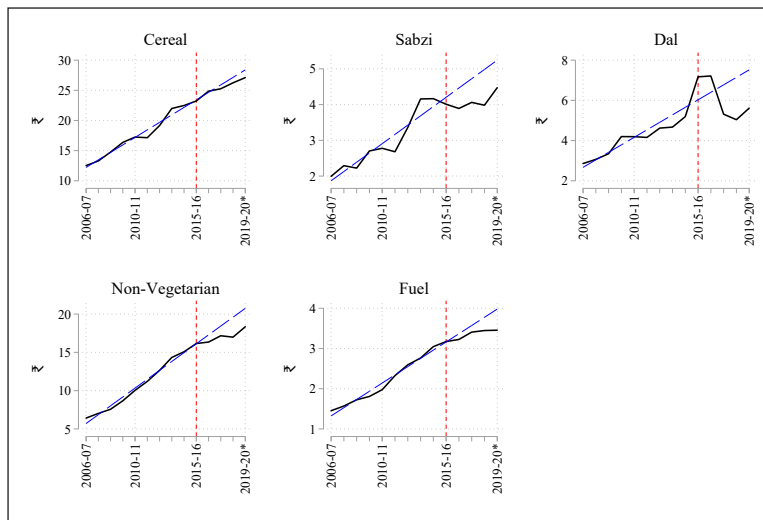


स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अनाज की कीमत 1 किलो अनाज के लिए है, अन्य घटकों की कीमतें एक भोजन के लिए है।

* अप्रैल-अक्टूबर, 2019

चित्र 9: घटकों के मूल्य- उत्तरी क्षेत्र

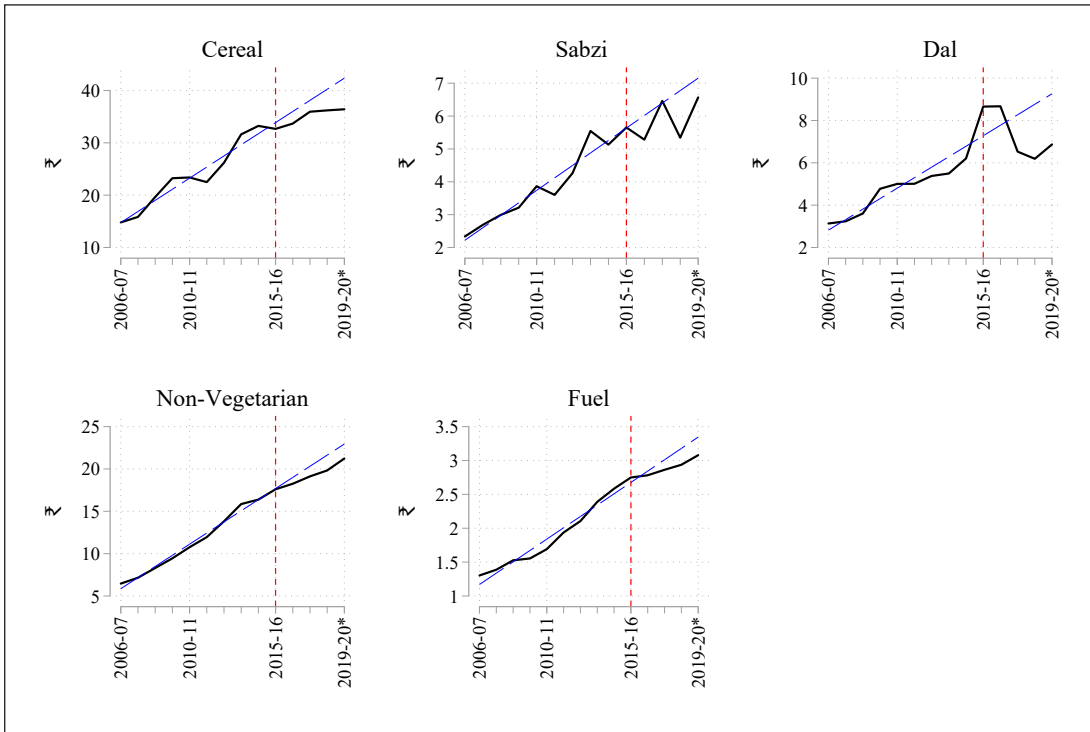


स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अनाज की कीमत 1 किलो अनाज के लिए है, अन्य घटकों की कीमतें एक भोजन के लिए है।

* अप्रैल-अक्टूबर, 2019

चित्र 10: घटकों के मूल्य - दक्षिण क्षेत्र

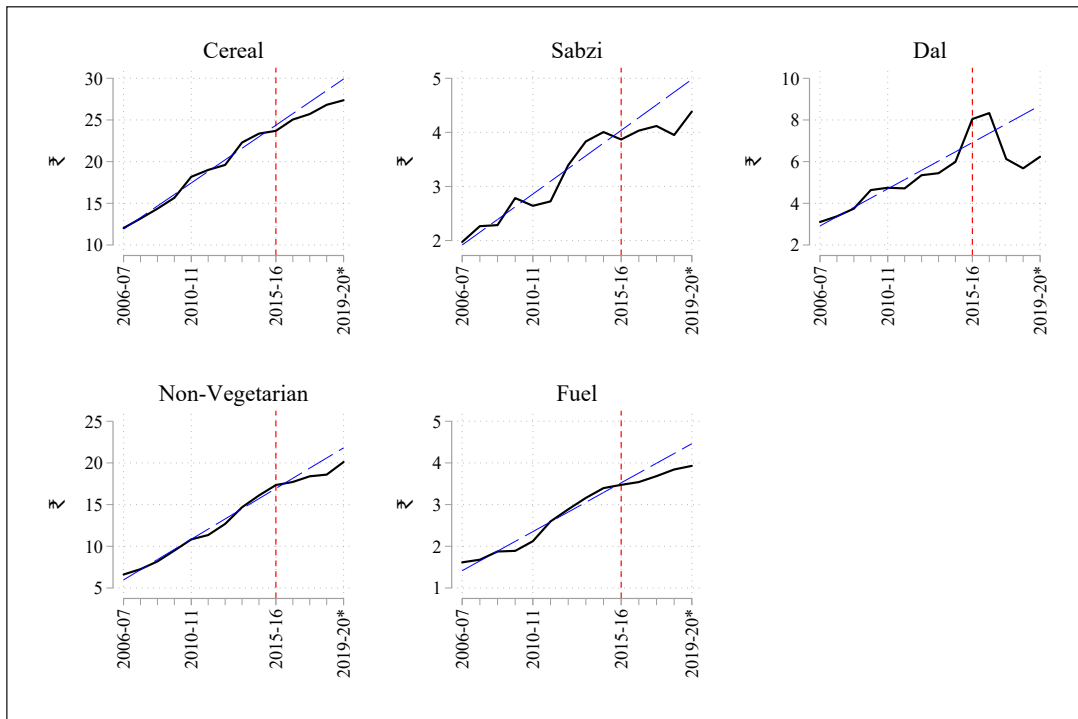


स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अनाज की कीमत 1 किलो अनाज के लिए है, अन्य घटकों की कीमतें एक भोजन के लिए है।

* अप्रैल-अक्टूबर, 2019

चित्र 11: घटकों के मूल्य - पूर्वी क्षेत्र

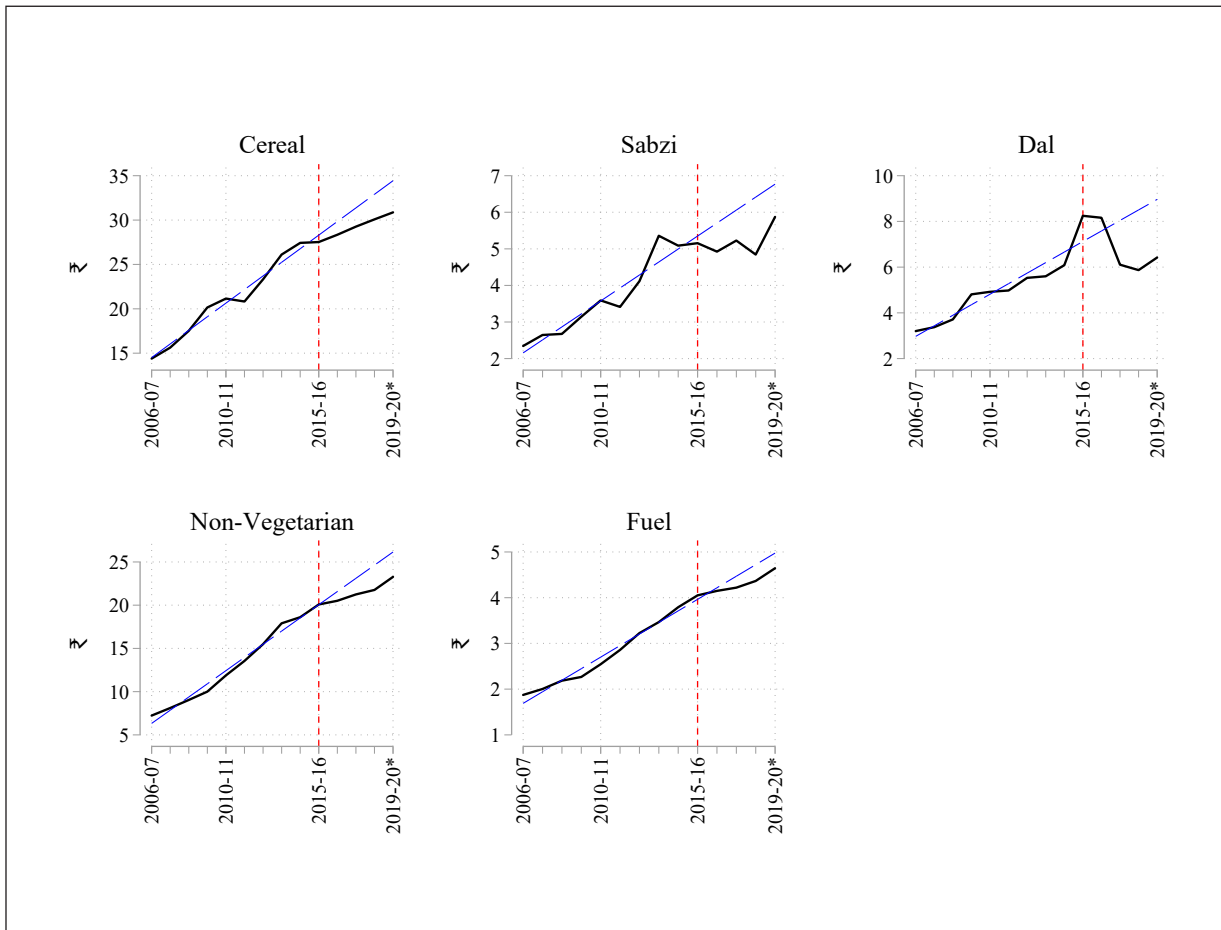


स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अनाज की कीमत 1 किलो अनाज के लिए है, अन्य घटकों की कीमतें एक भोजन के लिए है।

* अप्रैल-अक्टूबर, 2019

चित्र 12: घटकों के मूल्य - पश्चिम क्षेत्र



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अनाज के मूल्य 1 किलो अनाज के लिए है, अन्य घटकों की कीमतें एक भोजन के लिए है।

* अप्रैल-अक्टूबर, 2019

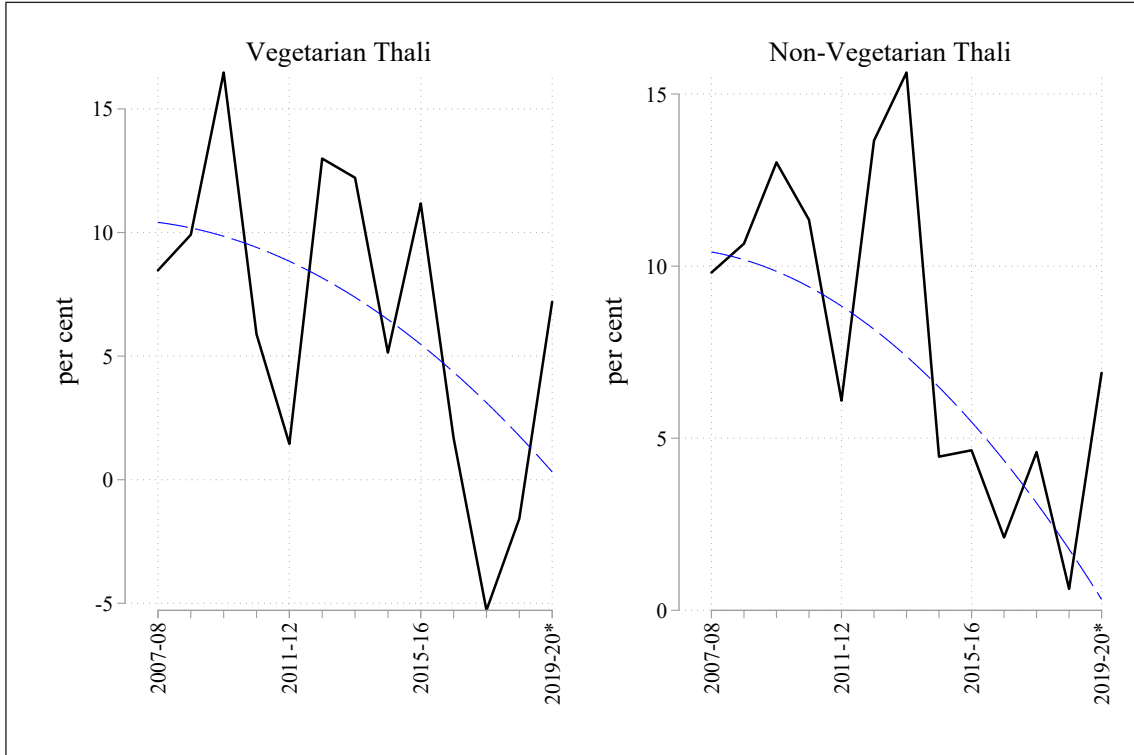
रावट देखी गई है। जैसाकि चित्र 13 स्पष्टतौर पर दर्शाता है, कि 2019-20 में शाकाहारी एवं मांसाहारी थालियों में स्फीति की दर में वृद्धि एक अस्थायी घटना है जोकि पूर्वस्थिति में वापस आ जाएगी जैसा कि पूर्व वर्षों में हुआ है। शाकाहारी थाली के मामले में, अखिल भारतीय स्तर पर स्फीति 2015-16 में प्राप्त किए गए काफी उच्च स्तर से अनुगामी वर्षों में गिरकर शून्य स्तर से भी नीचे पहुंच गई। मांसाहारी थाली के मामले में, 2013-14 के बाद स्फीति में तेजी से गिरावट (चित्र 13) आई है। हम देखते हैं कि समय के साथ-साथ सभी घटकों में स्फीति में गिरावट आई है। जहां अनाज में स्फीति दर इस अवधि के दौरान स्थिर दर पर घट रही है, वहीं सब्जी

(चित्र 14) के अलावा अन्य सभी घटकों में स्फीति में गिरावट में तेजी आई है। पिछले वर्ष के दौरान, दाल, सब्जी एवं मांसाहारी घटकों के लिए स्फीति की दर में वृद्धि हुई है। सभी क्षेत्रों और राज्यों में, सम्पूर्ण थाली की स्फीति में हमें एक ही रुझान नजर आता है जो कि गिरावट का है। (चित्र 15 से 20)

थाली की कीमतों में परिवर्तनशीलता

11.15 इतने वर्षों में यह देखा गया है कि अखिल भारतीय स्तर पर कीमतों में माह-दर-माह परिवर्तनशीलता का कोई स्पष्ट रुझान नहीं है (चित्र 21)। इसी प्रकार क्षेत्रवार और राज्यवार परिवर्तनशीलता में भी कोई विशिष्ट रुझान नहीं है (चित्र 22 व 23)।

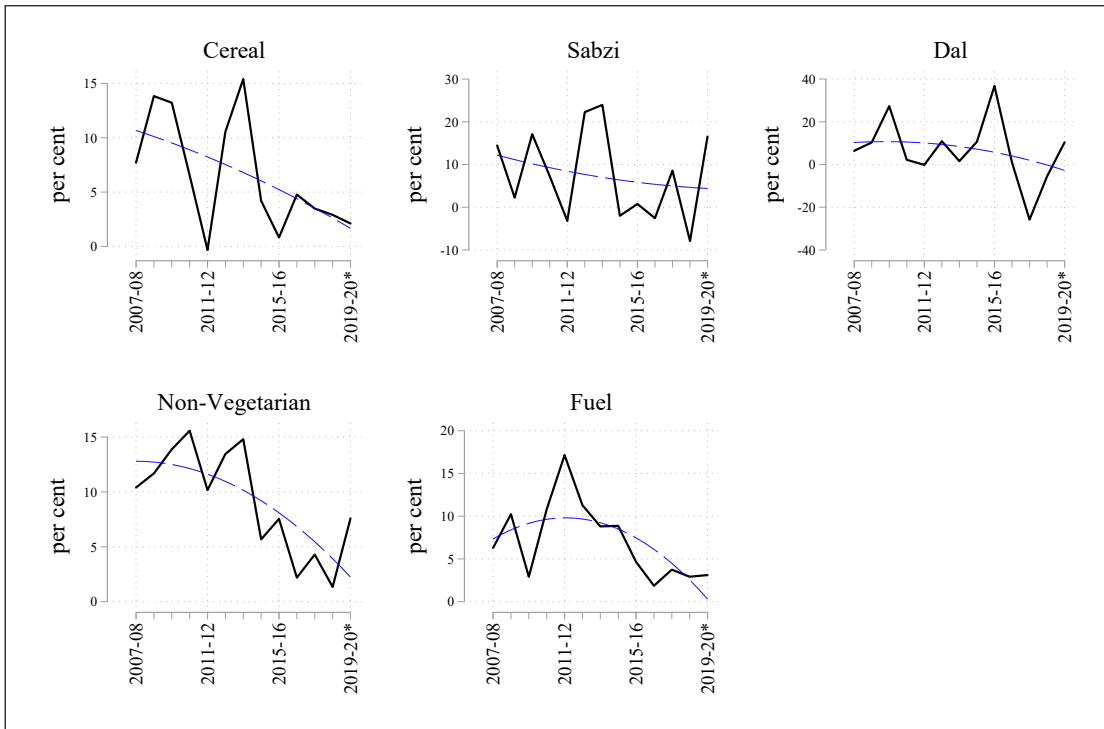
चित्र 13: थाली में अखिल भारतीय स्फीति



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर, 2019

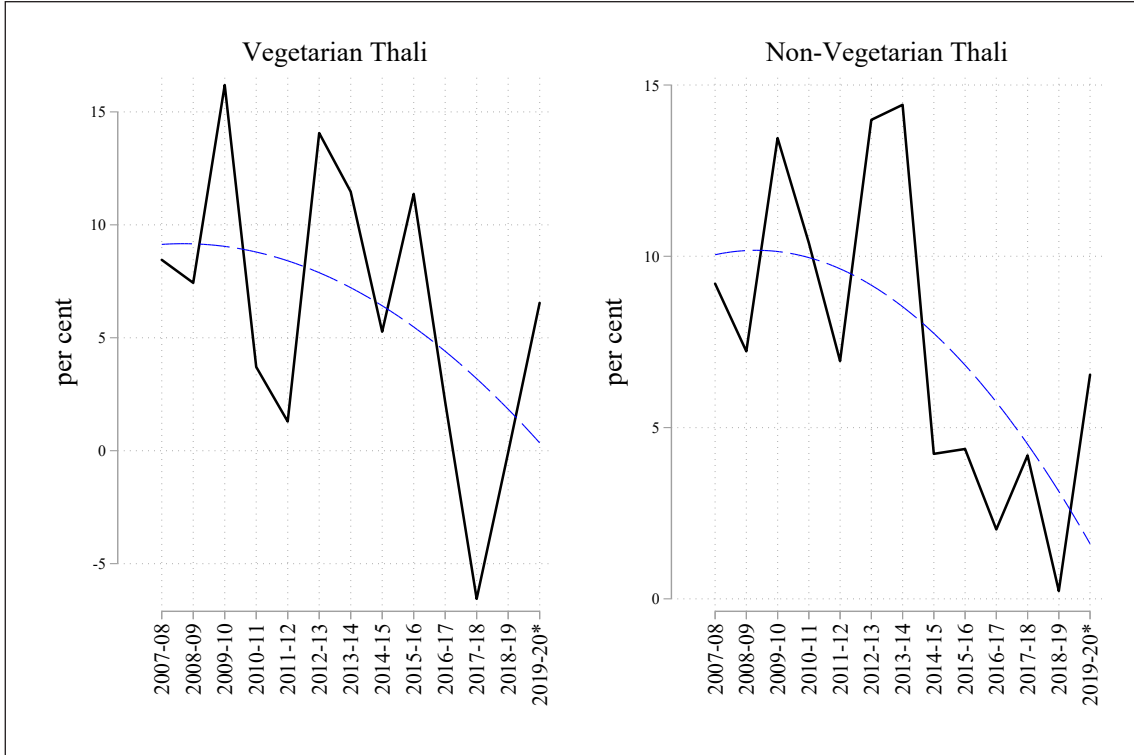
चित्र 14: थाली घटकों में अखिल भारतीय स्फीति



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

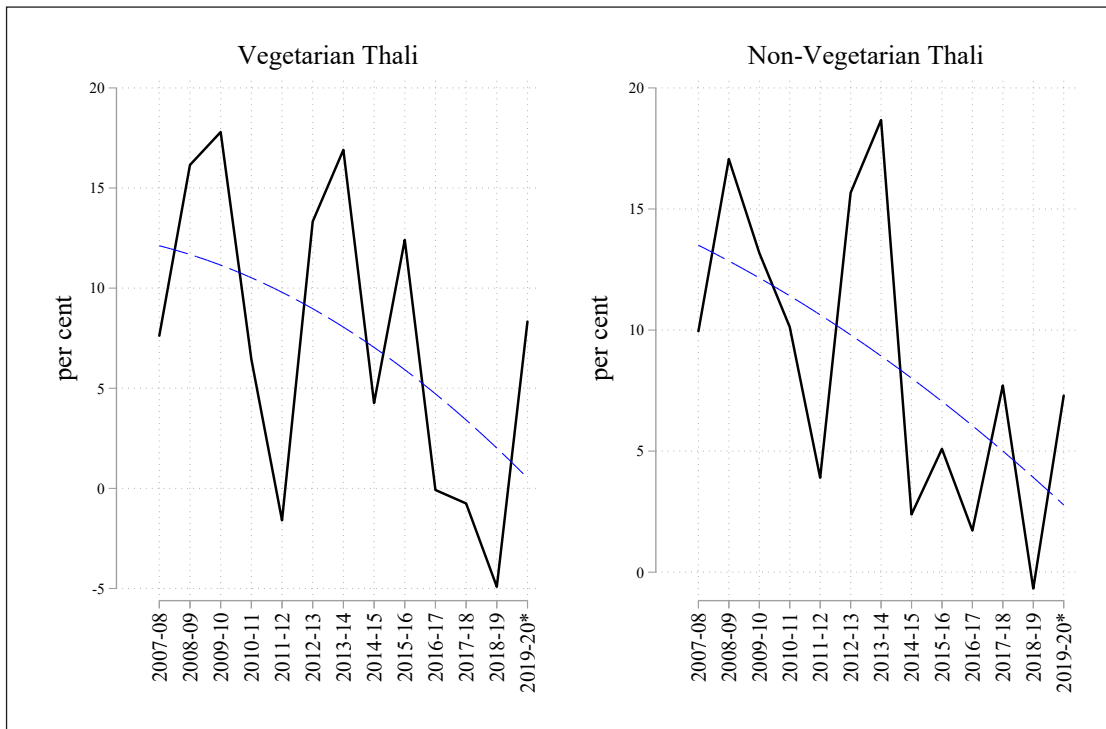
चित्र 15: थाली में उत्तरी क्षेत्र में स्फीति



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर, 2019

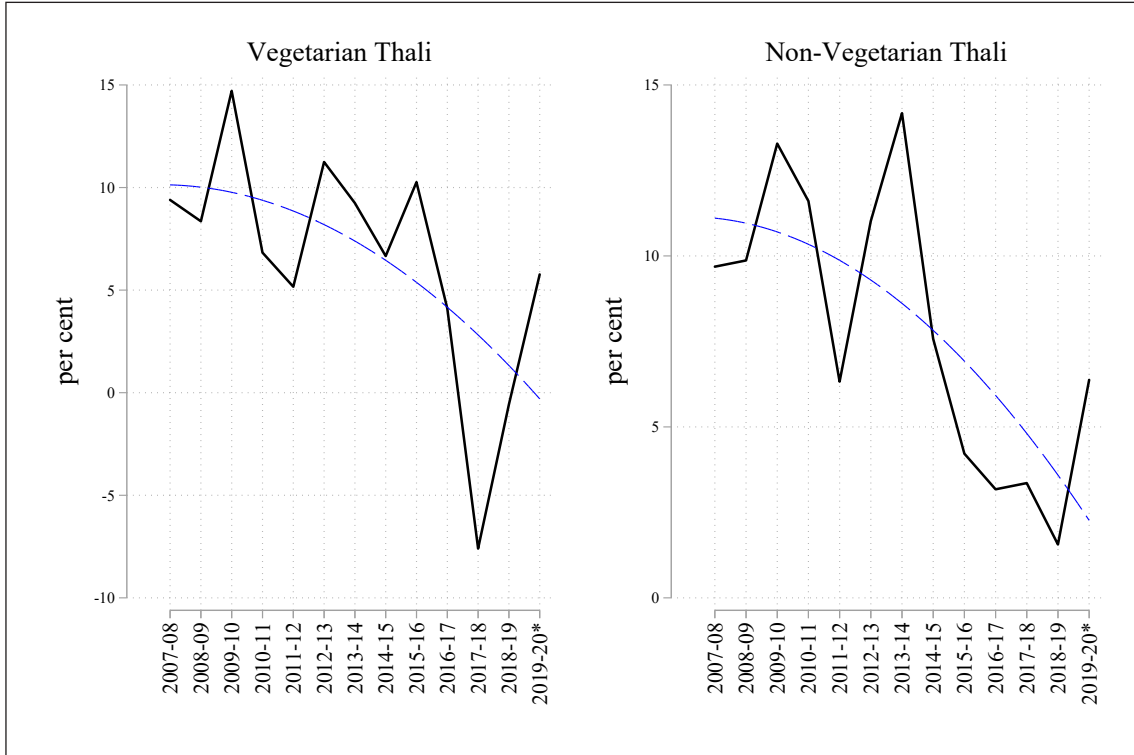
चित्र 16: थाली में दक्षिण क्षेत्र में मुद्रास्फीति



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर, 2019

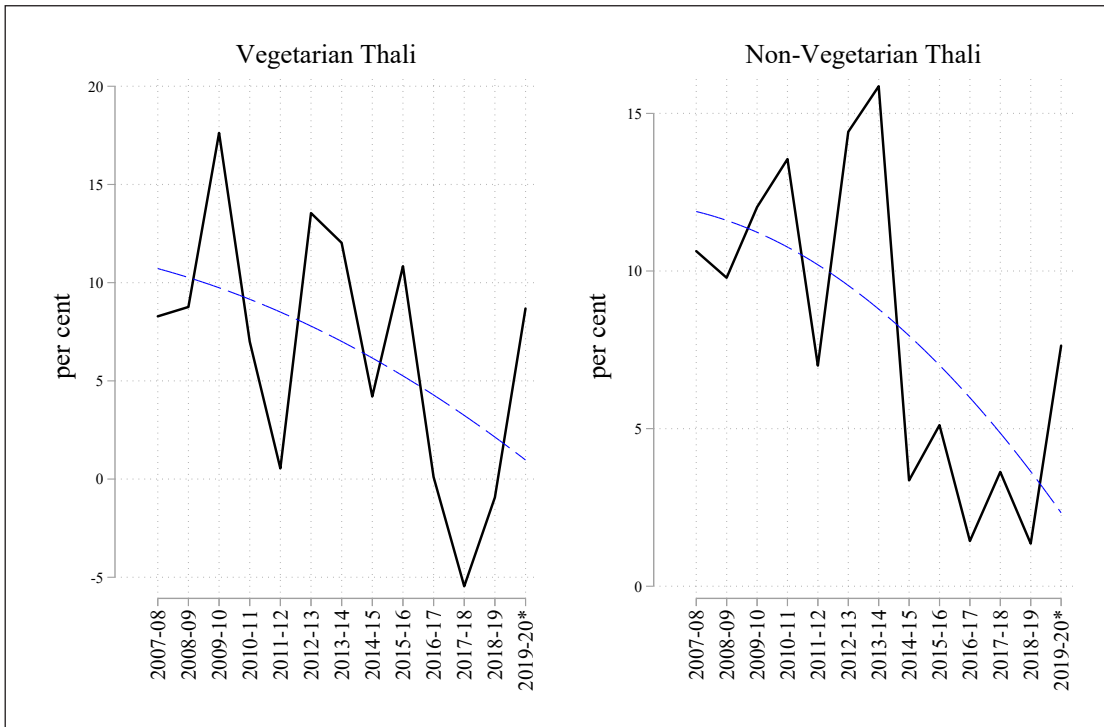
चित्र 17: थाली में पूर्वी क्षेत्र में स्फीति



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

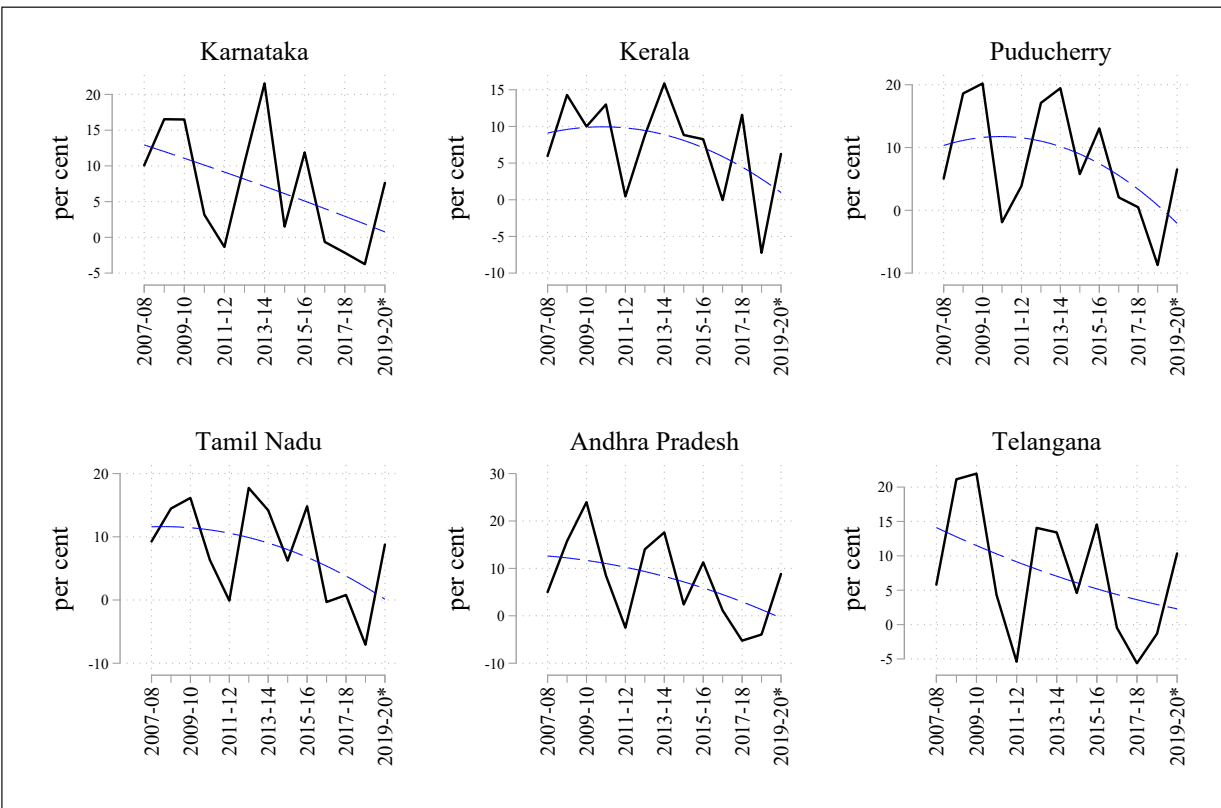
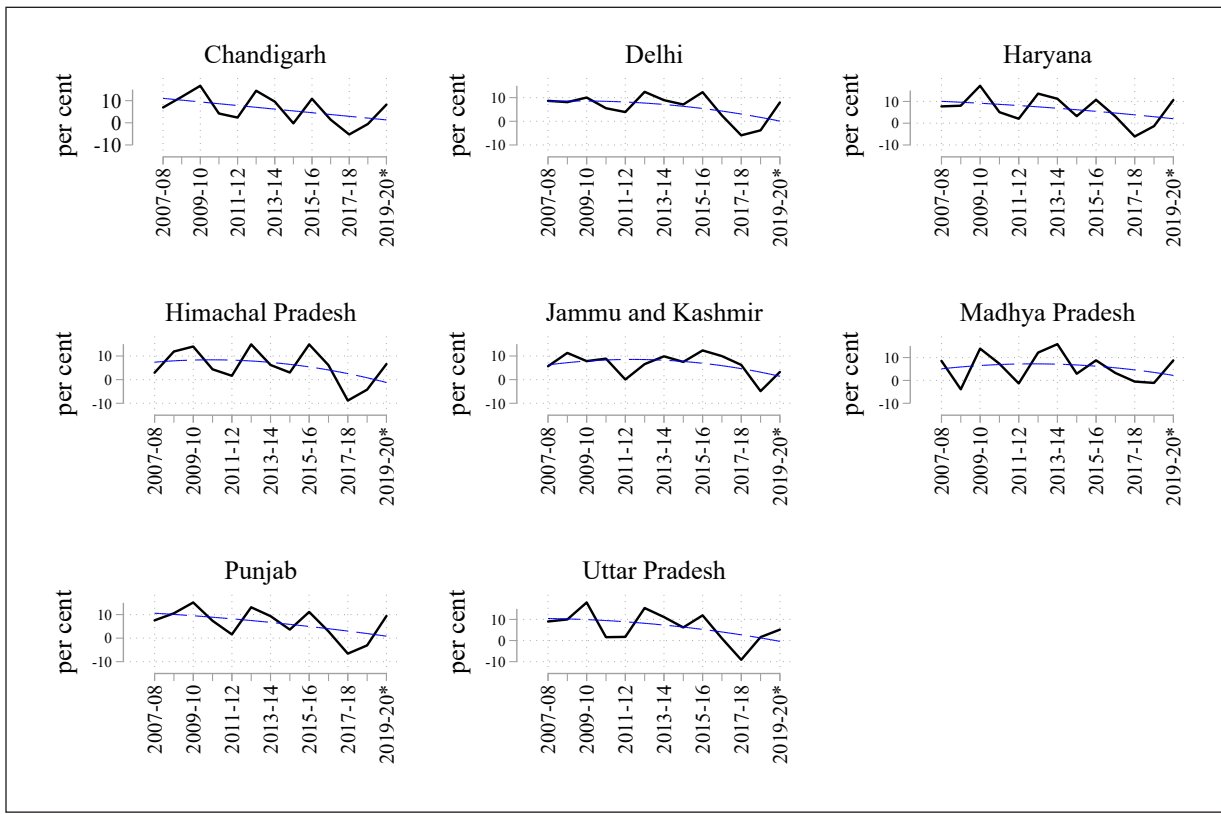
चित्र 18: थाली में पश्चिम क्षेत्र में स्फीति

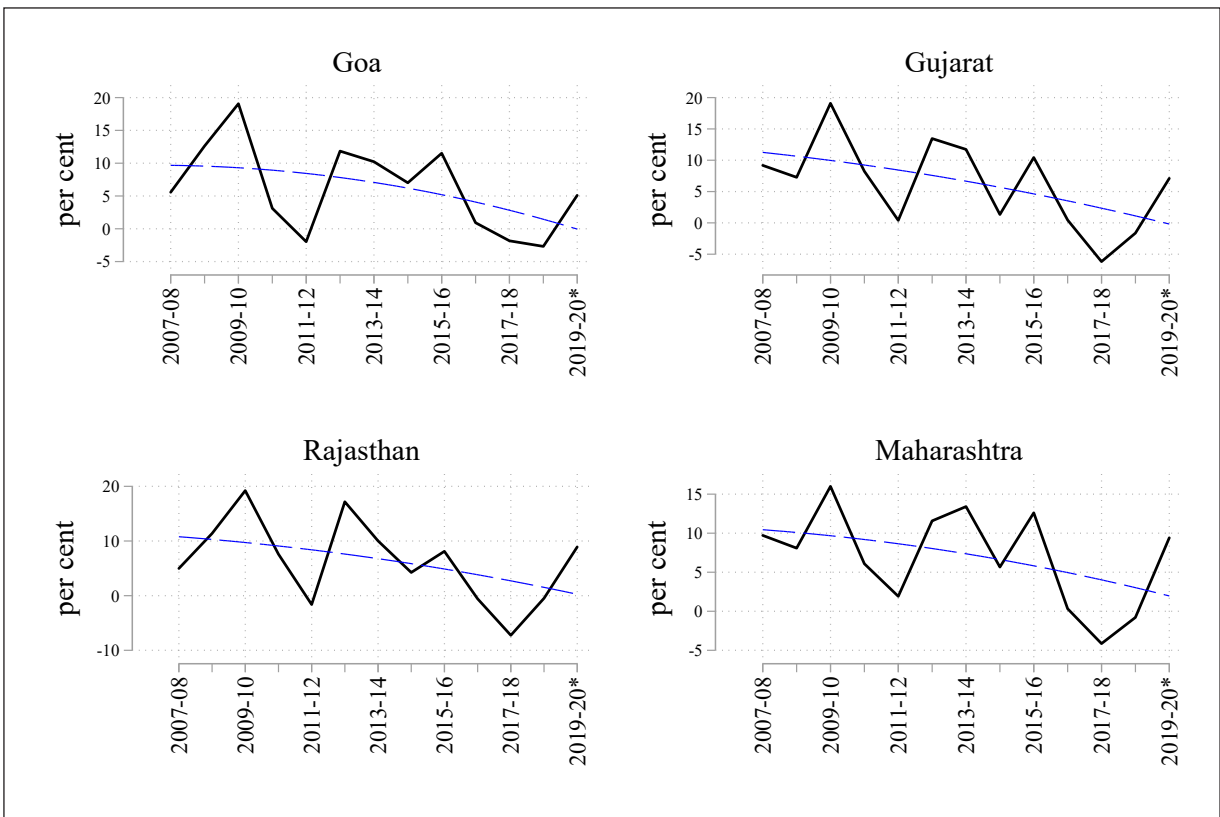
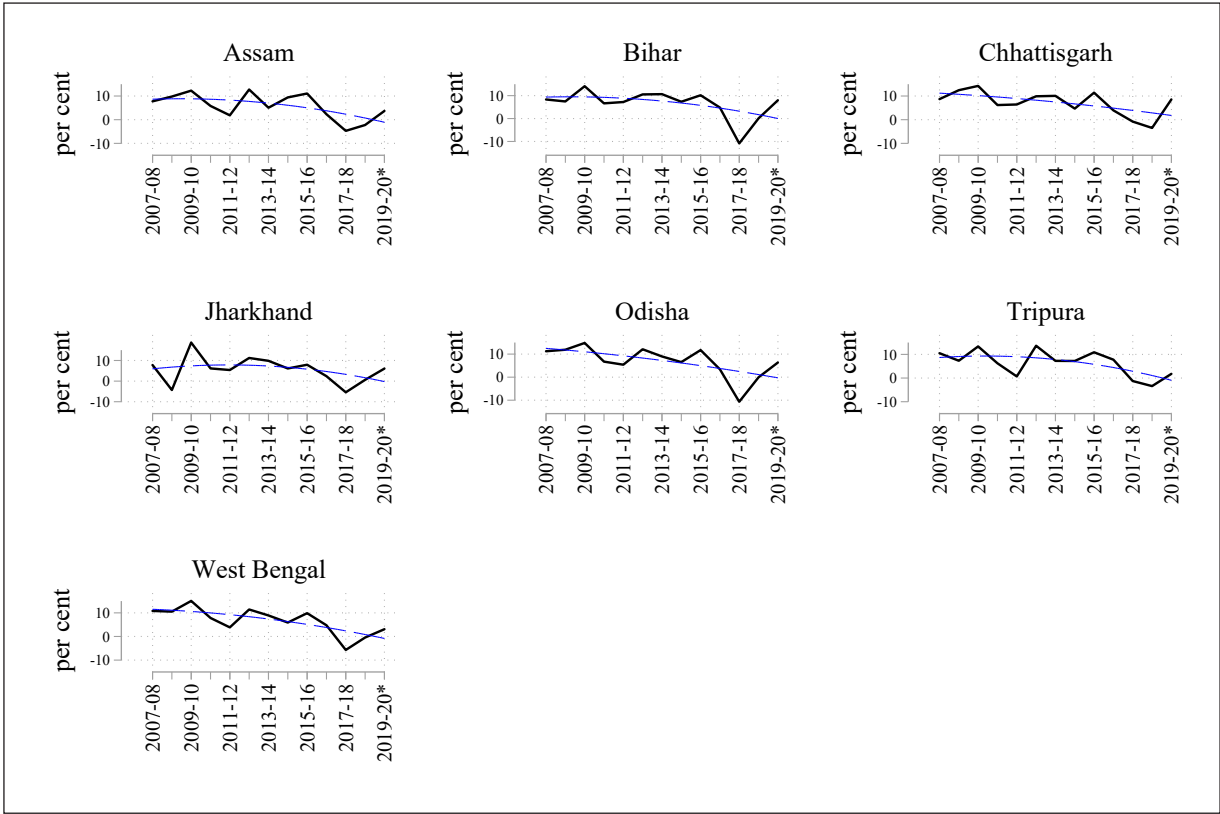


स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

चित्र 19: शाकाहारी थाली के मूल्यों में राज्य-वार स्फीति

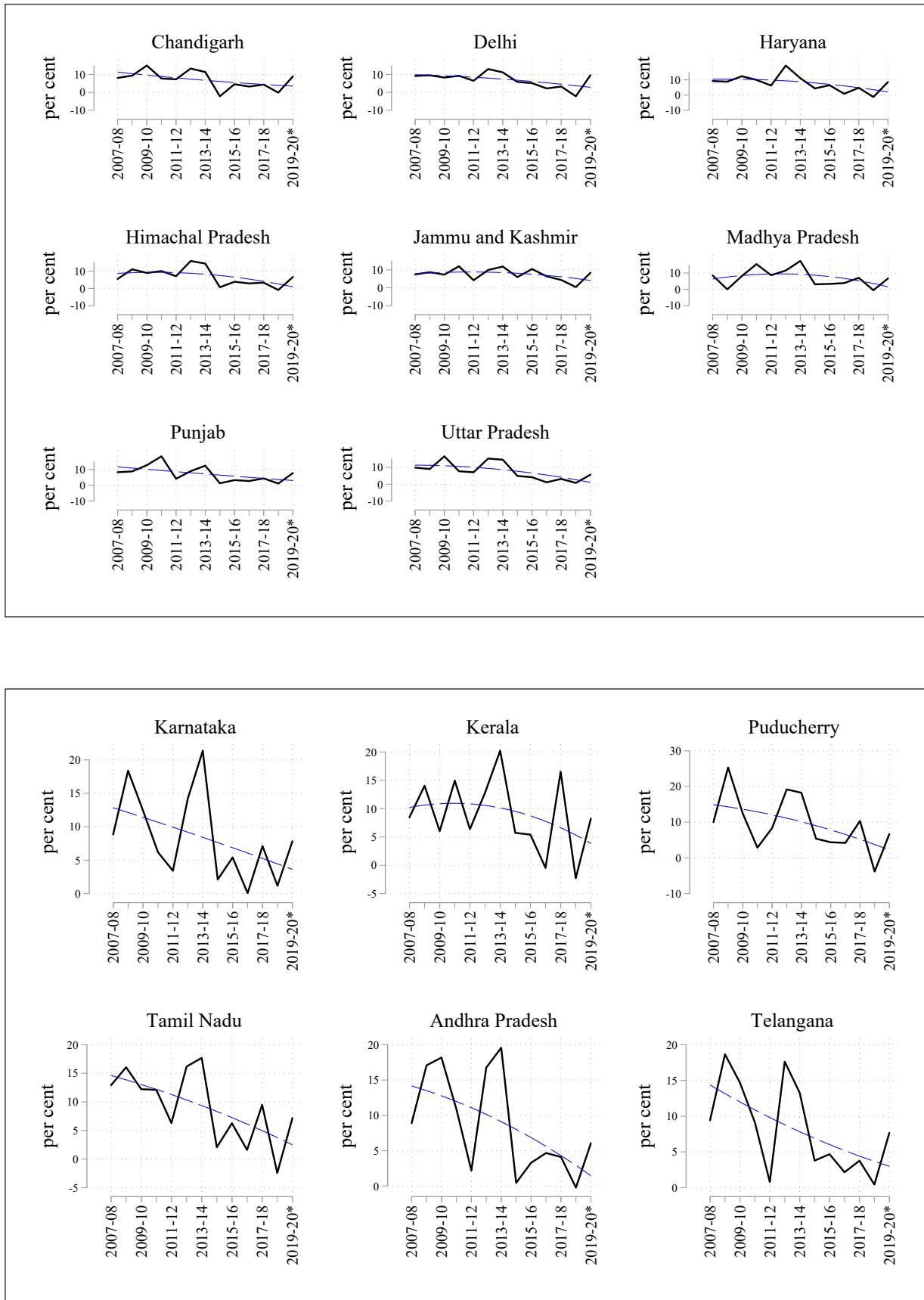


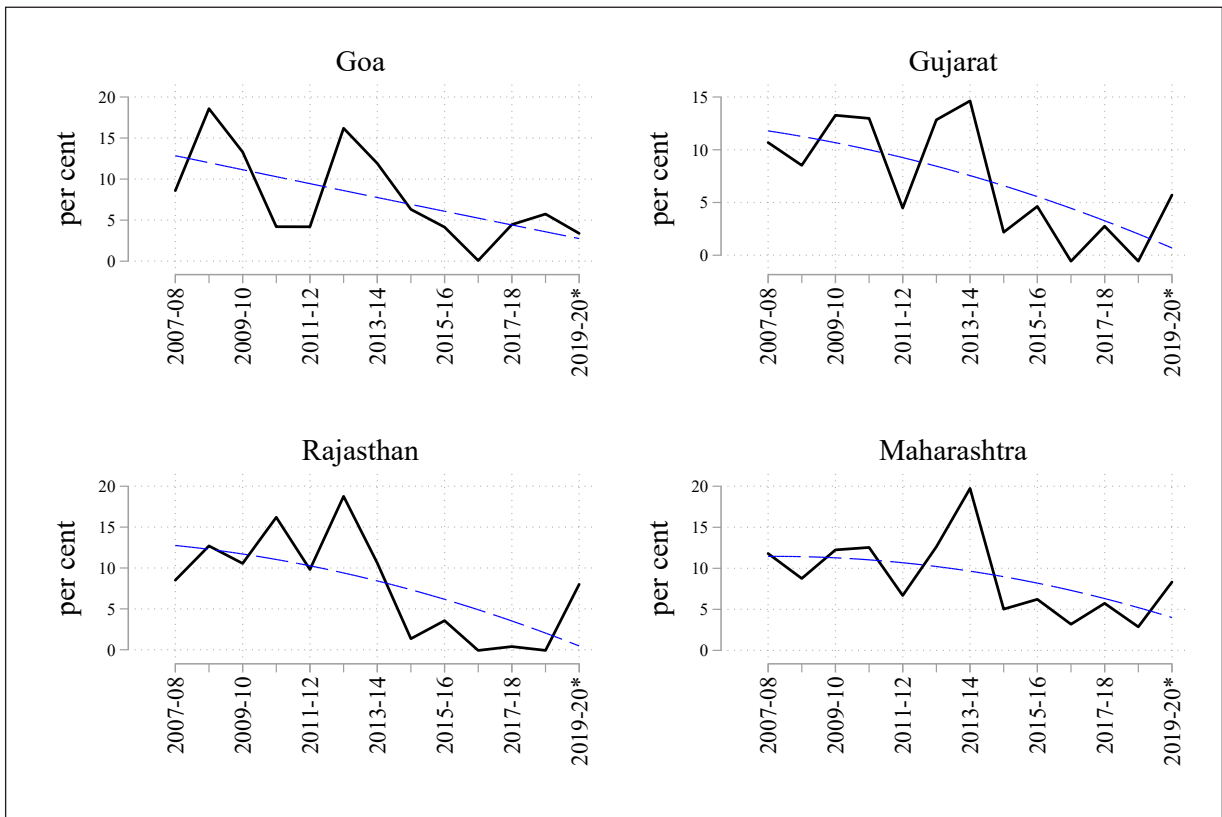
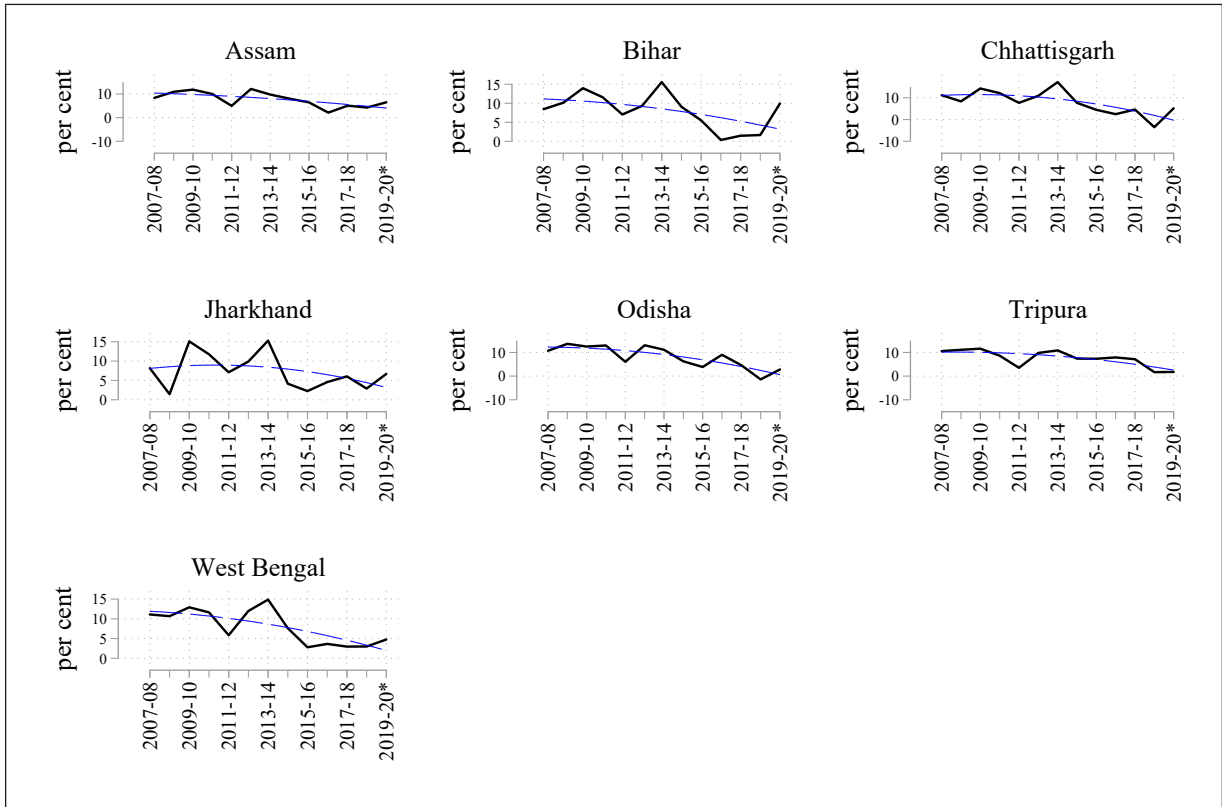


स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

चित्र 20: मांसाहारी थाली के मूल्यों में राज्यवार स्फीति

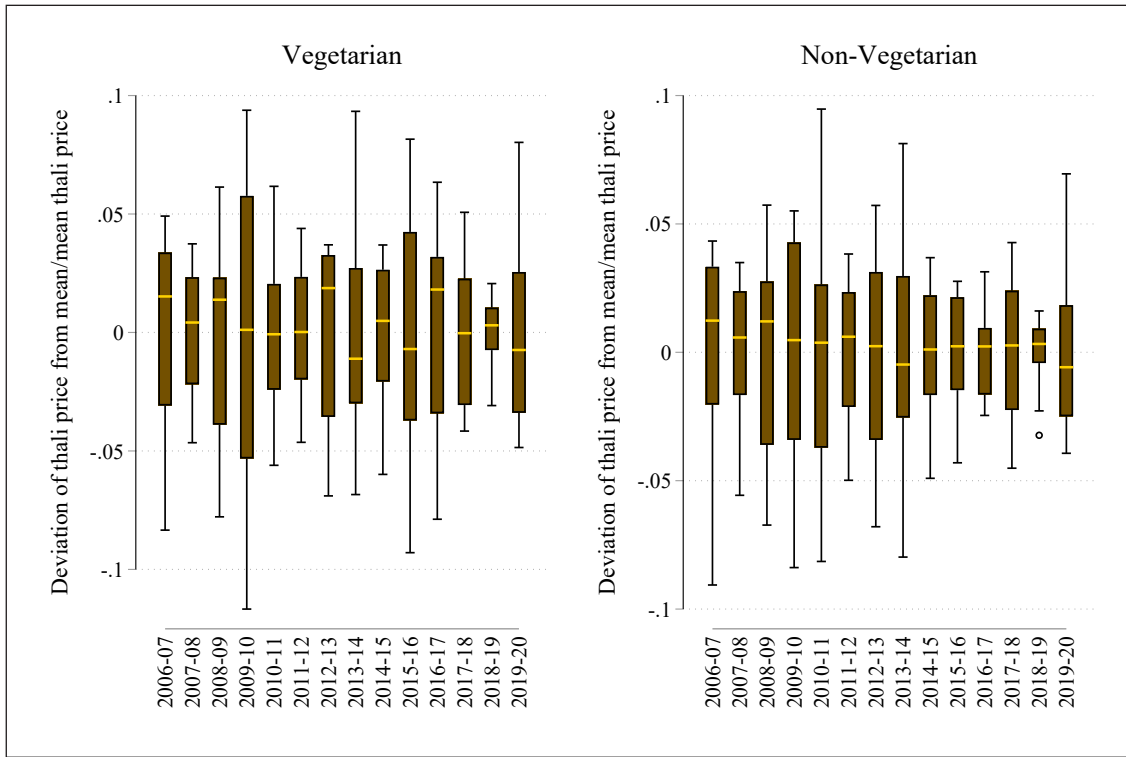




स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

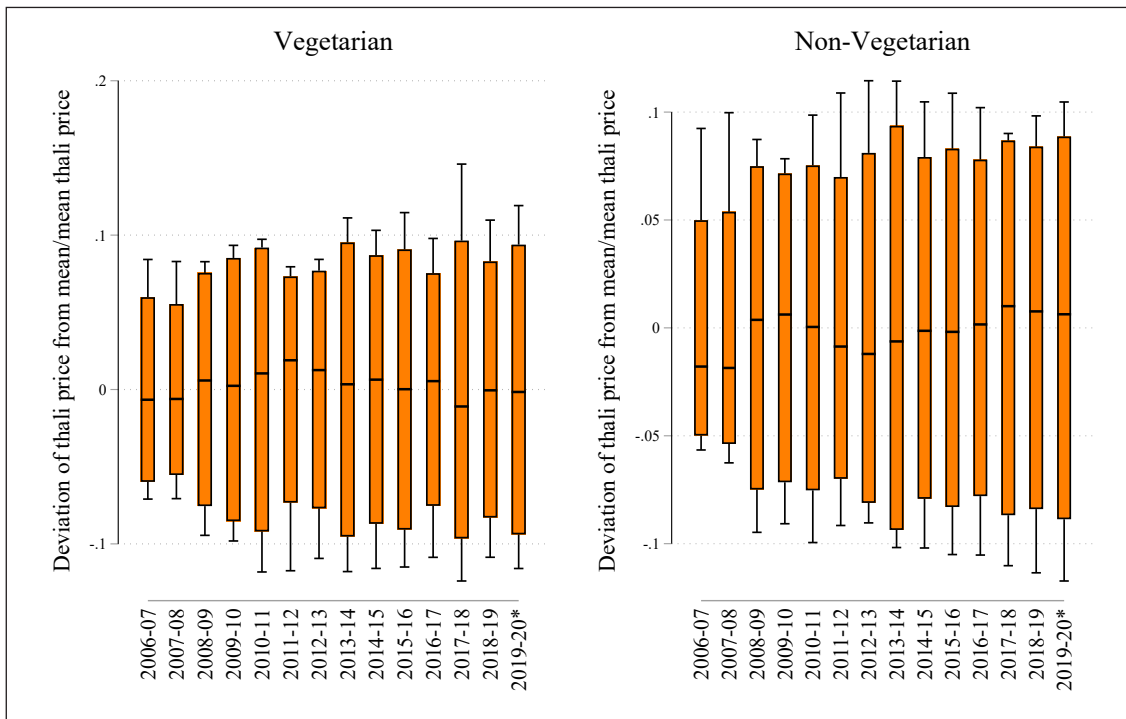
चित्र 21: अखिल भारतीय स्तर पर थाली की कीमतों में माह वार परिवर्तनशीलता, 2006-07 से 2019-20



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

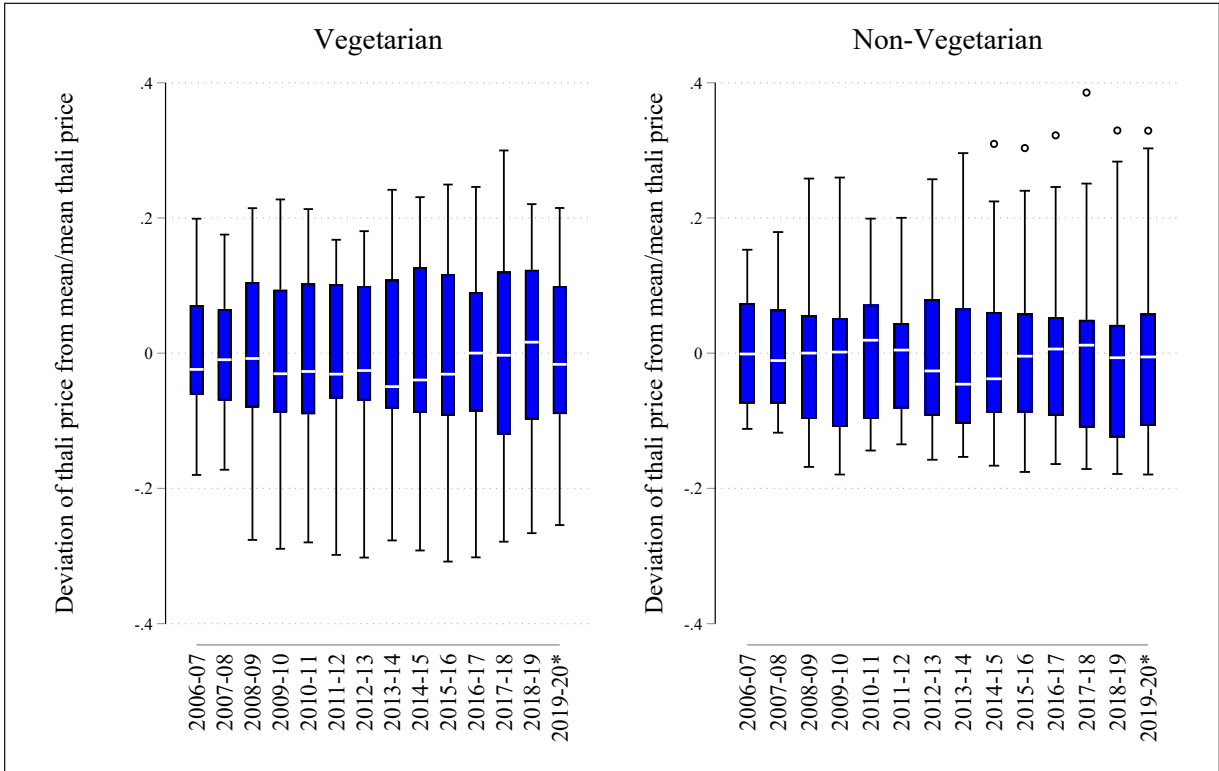
चित्र 22: विभिन्न क्षेत्रों में थाली की कीमत में विभिन्नता, 2006-07 से 2019-20



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

चित्र 23: थाली की कीमतों में राज्यवार विभिन्नता, 2006-07 से 2019-20



स्रोत: समीक्षा परिकलन

टिप्पणी: अप्रैल-अक्टूबर 2019

निष्कर्ष

11.16 भोजन केवल साध्य नहीं बल्कि मानव पूंजी के विकास में भी एक आवश्यक घटक है इसलिए राष्ट्रीय संपदा निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण है। 'जीरो हंगर' को विश्व के राष्ट्रों द्वारा एक सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) के रूप में स्वीकार किया गया है। यह लक्ष्य (एसडीजी 2) अन्य एसडीजी जैसे लक्ष्य 1 (गरीबी का अंत), लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा), लक्ष्य 5 (लैंगिक समानता), लक्ष्य 12 (जवा. बदेह खपत एवं उत्पादन), लक्ष्य 13 (जलवायु अनुयोजन) और लक्ष्य 15 (भूमि पर जीवन) से संबंधित है।

11.17 इस अध्याय में 2006-07 से 2019-20 (अप्रैल-अक्टूबर, 2019) के दौरान खाद्य पदार्थों की कीमतों के क्रमिक विकास को थाली के माध्यम से देखा गया है। 2015-16 से शाकाहारी थाली की कीमतों में अखिल भारतीय स्तर के सा. थ-साथ क्षेत्रीय स्तर पर गिरावट देखी गई, यद्यपि इस वर्ष थाली की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है। ऐसा सब्जियों और दालों की कीमतों में पहले के सालों के मुकाबले आई गिरावट के कारण हुआ है। सभी अन्य घटकों एवं थाली की कीमतों में गिरावट के कारण हमें समीक्षाधीन अवधि के दौरान गिरावट की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। थाली की वहन करने की क्षमता में कामगारों के वेतन के मुकाबले सुधार से आम व्यक्ति के कल्याण में बेहतरी का संकेत मिलता है।

एक नजर में अध्याय

- थालीनॉमिक्स, पूरे भारत में थाली के लिए आम व्यक्ति द्वारा कितना भुगतान किया जाता है परिमाणित करने का एक प्रयास है।
- विश्लेषण के लिए 25 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में लगभग 80 केन्द्रों के लिए अप्रैल 2006 से अक्टूबर 2019 तक औद्योगिकी कामगारों हेतु उपभोक्ता मूल्य सूचकांक से मासिक आंकड़ों का उपयोग किया गया है।
- 2015-16 को वह वर्ष माना जा सकता है जब खाद्य मूल्य के व्यवहार में परिवर्तन हुआ था। 2014-15 से अनेक सुधारात्मक उपाय किए गए थे ताकि बेहतर और अधिक पारदर्शी मूल्य खोज हेतु कृषिगत उत्पादों के बाजारों की प्रभाविता व कुशलता व कृषि क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाई जा सके।
- पूरे भारत और चारों क्षेत्रों-उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम- में हम देखते हैं कि 2015-16 से शाकाहारी थाली के मूल्य में काफी कमी आई है हालांकि मूल्य में 2019-20 में वृद्धि हुई है।
- 2015-16 के बाद शाकाहारी थाली के मामलों में खाद्य मूल्यों में कमी होने से औसत परिवार को औसतन 10887 रु. का लाभ हुआ है। इसी प्रकार जो परिवार औसतन दो मांसाहारी थाली खाता है उसे समान अवधि के दौरान औसतन 11787 रु. का लाभ हुआ है।
- एक औसत औद्योगिकी कामगार की वार्षिक आमदनी का उपयोग करते हुए हम पाते हैं कि 2006-07 से 2019-20 तक शाकाहारी थाली की वहनीयता में 29 प्रतिशत सुधार हुआ जबकि मांसाहारी थाली की वहनीयता में 18 प्रतिशत तक सुधार हुआ है।

संदर्भ

NIN, “*Dietary Guidelines for Indians -- A Manual*,” National Institute of Nutrition, Hyderabad, 2011.